www.deshkiupasana.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

RNI NO - UPHIN/2022/86937

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

DKU LIVE

सब पर नज़र, सबकी ख़बर

वर्ष – 04 | अंक – 262 | जौनपुर बुधवार, 13 मई 2026 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज – 4 | मूल्य – 2 रूपये

संक्षिप्त खबरें

भाजपा कार्यालयों पर हमला लोकतंत्र के लिए शर्मनाक – तरुण चुघ

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुघ ने आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि उनकी ओर से की गई कथित हिंसा लोकतंत्र के लिए शर्मनाक है। तरुण चुघ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म श्एक्सश पर पोस्ट करते हुए दावा किया कि पंजाब के तरनतारन, लुधियाना और जीरकपुर में भाजपा कार्यालयों पर हमले किए गए और उन्हें नुकसान पहुंचाया गया। उन्होंने कहा कि कुछ अराजक तत्वों ने कार्यालयों में तोड़फोड़ की, भाजपा कार्यकर्ताओं पर स्याही फेंकी और उनके साथ धक्का–मुक्की व मारपीट की।उन्होंने इस घटना को लोकतंत्र पर कलंक बताते हुए कहा कि यह पंजाब की भगवंत मान सरकार की विफलता को दर्शाता है। उन्होंने सवाल उठाया कि ऐसे तत्वों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई क्यों नहीं कर रही है और क्या पुलिस का इन कथित गुंडों से संबंध है? भाजपा नेता ने आरोप लगाया कि पुलिस की निष्क्रियता गंभीर चिंता का विषय है और इस पर जवाब दिया जाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि भाजपा ऐसे सभी तत्वों के खिलाफ मजबूती से लड़ेगी और पंजाब को किसी भी हालत में बंगाल बनने नहीं देगी।वहीं, पंजाब भाजपा के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष अश्वनी शर्मा ने पंजाब में भाजपा कार्यालयों पर आम आदमी पार्टी (आप) कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए हमले और उपद्रवी व्यवहार की निंदा की। साथ ही उन्होंने रविवार को चेतावनी दी थी।

चंद्रबाबू नायडू ने प्रधानमंत्री की विदेशी मुद्रा भंडार बचाने की अपील का समर्थन किया

अमरावती, (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की देश से विदेशी मुद्रा भंडार बचाने की अपील का जोरदार समर्थन किया और सभी से इसे एक मिशन की तरह अपनाने का आग्रह किया। दिल्ली में आयोजित सीआईआई वार्षिक व्यापार शिखर सम्मेलन में बोलते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान भू–राजनीतिक स्थिति देश को आत्मनिर्भरता और संसाधन संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करने की याद दिलाती है।मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) द्वारा जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार, मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने रविवार को हैदराबाद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उल्लिखित राष्ट्रीय मिशन का जिक्र करते हुए उभरती वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए सुझाए गए कई महत्वपूर्ण उपायों पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री मोदी की अपील को दोहराते हुए उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने सोने की खरीद स्थगित करने, ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देने, सार्वजनिक परिवहन के उपयोग को प्रोत्साहित करने, वर्क फ्रॉम होम कल्चर को अपनाने, उर्वरक की खपत कम करने और प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ने का आह्वान किया है।मुख्यमंत्री नायडू ने जोर दिया ।कि अंतरराष्ट्रीय संघर्षों के कारण उत्पन्न ईंधन और ऊर्जा संकट से ग्रस्त वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ये उपाय आवश्यक हैं।

बंगाल के मेरे भाई-बहनों का कल्याण सर्वोपरि- पीएम मोदी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को पश्चिम बंगाल में आयुष्मान भारत योजना को लागू करने के फैसले का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि दो इंजन वाली सरकार प्रमुख केंद्रीय योजनाओं का सुचारू रूप से कार्यान्वयन सुनिश्चित करेगी। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने सोमवार को घोषणा की कि राज्य केंद्र की प्रमुख योजना को लागू करेगा, जिसके तहत प्रत्येक पात्र परिवार को प्रतिवर्ष 5 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा प्रदान किया जाता है। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा श्पश्चिम बंगाल के मेरे भाई–बहनों का कल्याण सर्वोपरि है। मुझे बहुत खुशी है कि राज्य के लोगों को आयुष्मान भारत योजना का लाभ मिलेगा, जो विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य योजना है। इससे उच्च गुणवत्ता वाली एवं किफायती स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करती है।श आगे कहा कि श्डबल इंजन वाली सरकार प्रमुख केंद्रीय योजनाओं का निर्बाध कार्यान्वयन सुनिश्चित करेगी। केंद्र सरकार ने इस योजना की शुरुआत साल 2018 में की थी। इस योजना का नाम अब बदलकर प्रधानमंत्री जन–आरोग्य योजना (च्डश्र।ल) कर दिया गया है। इस योजना के तहत सरकार पात्र परिवारों को 5 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा देती है। योजना के पात्र परिवारों को आयुष्मान गोल्डन कार्ड दिया जाता है। इस कार्ड को दिखाकर पात्र व्यक्ति सूचीबद्ध अस्पतालों में पांच लाख रुपये तक का फ्री इलाज करा सकता है। अपनी पहली कैबिनेट बैठक की अध्यक्षता करने के बाद अधिकारी ने कहा कि नई भाजपा सरकार ने पश्चिम बंगाल में आयुष्मान भारत योजना को लागू करने सहित छह ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 15 नर्सिंग कर्मियों को फ्लोरेंस नाइटिंगेल से किया सम्मानित

नई दिल्ली, (एजेंसी)। इस वर्ष देश के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से 15 नर्सिंग कर्मियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए चुना गया है।राष्ट्रपति ने इस अवसर पर कहा कि नर्सिंग कर्मी सेवा के उच्चतम मानकों का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवा पेशेवर करुणा और समर्पण के साथ राष्ट्र की सेवा करते हैं तथा कई बार अत्यंत चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी रोगियों की देखभाल सुनिश्चित करते हैं। राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा, "यह अवसर उन नर्सिंग कर्मियों और स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों के अमूल्य योगदान के प्रति उपयुक्त श्रद्धांजलि है, जो करुणा और अटूट समर्पण के साथ राष्ट्र की सेवा करते हैं। मैं सभी पुरस्कार विजेताओं की कर्तव्य के प्रति प्रेरणादायक निष्ठा और रोगी देखभाल के उच्चतम मानकों को बनाए रखने में उनके अथक प्रयासों की सराहना करती हूं।" उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगेल पुरस्कारों की स्थापना वर्ष 1973 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा नर्सिंग क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं को मान्यता देने के उद्देश्य से की गई थी। यह पुरस्कार देश में नर्सिंग पेशे का सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान माना जाता है। इस वर्ष पुरस्कार प्राप्त करने वालों में एएनएम श्रेणी में लद्दाख से कुलविंदर परही, महाराष्ट्र से उज्वला महादेव सोयम, मिजोरम से लालेनथांगी नामटे, सिक्किम से मधु माला गुरुंग, उत्तराखंड से पूजा परमार राणा और पश्चिम बंगाल से गीता कर्माकर शामिल हैं। नर्स श्रेणी में चंडीगढ़ से पूनम वर्मा, दादरा एवं नगर हवेली तथा दमन एवं दीव से दीपा बीजू, दिल्ली से डॉ. श्रवण कुमार ढाका, तमिलनाडु से प्रोफेसर (डॉ.) आर. शंकर शानमुगम तथा सेना मुख्यालय (आईएचक्यू, रक्षा मंत्रालय), दिल्ली से मेजर जनरल लिस्सम्मा पी.वी. को सम्मानित किया गया।

असम के लिए ऐतिहासिक दिन, तीसरी बार बनेगी भाजपा सरकार – शिवराज

गुवाहाटी, (एजेंसी)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सोमवार को हिमंता बिस्वा सरमा के शपथ ग्रहण समारोह को भाजपा के लिए एक ऐतिहासिक दिन बताया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि असम में तीसरी बार भारी बहुमत से पार्टी की सत्ता में वापसी प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन के विकास एजेंडे में जनता के विश्वास को दर्शाती है। मंगलवार को होने वाले सरमा के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए गुवाहाटी पहुंचने के बाद शिवराज सिंह चौहान ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन का असम में लगातार तीसरी बार सत्ता में आना एक महत्वपूर्ण राजनीतिक उपलब्धि है।चौहान ने कहा, ष्ये असाधारण दिन हैं। भारतीय जनता पार्टी ने रिकॉर्ड तोड़ बहुमत के साथ लगातार तीसरी बार सरकार बनाई है। यह प्रधानमंत्री मोदी पर जनता के भरोसे की जीत है, विकास की जीत है और जन कल्याण की जीत है।ष चुनाव विश्लेषण केंद्रीय मंत्री ने कांग्रेस पर तीखा हमला करते हुए आरोप लगाया कि विपक्षी पार्टी एक श्सांप्रदायिक पार्टीश बनकर रह गई है। उन्होंने आगे कहा, ष्कांग्रेस अब एक सांप्रदायिक पार्टी बन गई है। हिमंता बिस्वा सरमा के नेतृत्व में असम ने उल्लेखनीय विकास देखा है। प्रधानमंत्री मोदी के आशीर्वाद और मार्गदर्शन से राज्य एक सुरक्षित और विकसित असम की ओर बढ़ रहा है।

सीएम शुभेंदु ने कहा– यह सरकार जनता की सरकार है, जनता के लिए है

कोलकाता, (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के नए मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने सोमवार को अपने कार्यकाल के पहले दिन को श्घटनाओं से भराश बताया। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने चुनावी वादों को जमीन पर उतारने की शुरुआत कर दी है और पहली ही कैबिनेट बैठक में कई बड़े फैसले लिए गए हैं। मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि उनकी सरकार ने श्असल परिवर्तनश की दिशा में छह अहम फैसले लिए हैं। उन्होंने कहा कि अब राज्य में केंद्र सरकार की आयुष्मान भारत योजना लागू की जाएगी, जिससे पश्चिम बंगाल के लोगों को स्वास्थ्य बीमा का लाभ मिल सकेगा। शुभेंदु अधिकारी ने यह भी कहा कि भारत–बांग्लादेश सीमा पर बाड़ लगाने के काम को तेज करने के लिए सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) को जमीन हस्तांतरित की जाएगी। उन्होंने दावा किया कि यह प्रक्रिया 45 दिनों के भीतर पूरी कर ली जाएगी। नई सरकार ने राज्य सरकारी नौकरियों के लिए उम्मीदवारों की अधिकतम आयु सीमा में पांच साल की बढ़ोतरी करने का भी फैसला लिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछली सरकार के दौरान युवाओं का काफी समय खराब हुआ, इसलिए उन्हें राहत देने के लिए यह कदम उठाया गया है। कैबिनेट बैठक में भारतीय न्याय संहिता (ठछै) को राज्य में औपचारिक रूप से लागू करने का फैसला भी लिया गया। इसके अलावा जनगणना प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए भी मंजूरी दी गई, ताकि लोगों को सही प्रतिनिधित्व मिल सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार उन 321 परिवारों की मदद के लिए भी कदम उठाएगी, जिनके परिजनों की कथित तौर पर श्लोकतंत्र की रक्षा करते हुएश मौत हुई थी। उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार की योजनाओं जैसे पीएम विश्वकर्मा योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और पीएम उज्ज्वला योजना के क्रियान्वयन में आ रही बाधाओं को भी हटाया जाएगा।

संत शेरसिंह के 37वें महापरिनिर्वाण दिवस पर एजुकेशनल ट्रस्ट ने उन्हें दी भावभीनी श्रद्धांजलि : ट्रस्ट के चौयरमेन प्रो.हंसराज सुमन ने बताया शिक्षा,साहित्य,समाज एवं पत्रकारिता जगत से 20 हस्तियों को किया जाएगा सम्मानित

दिल्ली ब्यूरो चीफ पी अस्थाना

नई दिल्ली। दिल्ली देहात के गाँव लिबासपुर में जन्में संत शेरसिंह के 37 वें महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय उत्तरी परिसर के कला संकाय में संत शेरसिंह रिसर्च एण्ड एजुकेशनल ट्रस्ट रजि.की ओर से उनकी पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर संत शेरसिंह के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनके सामाजिक कार्यों को याद किया गया। इस अवसर पर उनके सामाजिक कार्यों का उल्लेख किया,संत शिरोमणी कबीर संबंधी उनके विचारों की व्याख्या की तथा उनके गाए गए पदों का पाठ किया। कार्यक्रम में ट्रस्ट के चेयरमैन प्रो हंसराज सुमन,सरिता पाटिल सुमन,पल्लवी प्रियदर्शिनी,डॉ.योगेंद्र पाटिल,प्रदीप पाटिल,प्रसून पाटिल,उत्कर्ष पाटिल,गणेश राज,अविनाश बनर्जी,संदीप कुमार तोमर,राज चौहान,महिपाल पाटिल आदि लोगों ने इस आयोजन को भव्य एवं गरिमामय बनाया । ट्रस्ट के चेयरमैन सुमन ने संत शेरसिंह का स्मरण करते हुए कहा कि संत शेरसिंह कबीर साहेब के सच्चे अनुयायी थे। वे मध्यकालीन संत परम्परा के सर्वश्रेष्ठ क्रांतिकारी कवि संत कबीर साहेब से विशेष प्रभावित थे। अपने जीवन को उन्होंने कबीर साहेब के विचारों से पूरी तरह से ढाल लिया था। वे दिल्ली और हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे लोगों को कबीर साहेब की वाणी, शबद, रमैनी को गाकर सुनाते थे।उनसे प्रभावित होकर बहुत से लोग उनके शिष्य बन गए थे।उन्होंने बताया कि महात्मा कबीर के विचारों के प्रचार प्रसार के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया था। कबीर साहेब द्वारा रचित उनकी साखियाँ, बीजक,रमैनी, शबद को गा–गाकर वे आम लोगों के बीच मानवता एवं भाईचारे का प्रचार प्रसार करते रहे। समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने में जिस तरह से कबीर साहेब ने प्रयास किया संत शेर सिंह ने उसी का अनुकरण करते हुए कबीर साहेब के विचारों को जन–जन तक पहुंचाया। संत शेरसिंह ने समाज में फैली विसंगतियों,छुआछूत, जातिप्रथा,ध ार्मिक आडंबर, हिंसा तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध आम लोगों में जन जागृति फैलाई।उनके शिष्यों ने कबीर साहेब की वाणियों का गायन करते हुए समाज में जागरूकता का संदेश दिया। उन्होंने भ्रष्टाचार के विरुद्ध प्रशासन तक अपनी आवाज पहुंचाई। वे ऐसे समाज का सपना देखते थे जहाँ आपसी सौहार्द, भाईचारा, एक–दूसरे के प्रति सहयोग की भावना एवं समानता का भावबोध हो। वह समझते थे कि सामाजिक समरसता बनाए रखने के लिए और मूलभूत परिवर्तन के लिए कबीर साहेब की वाणी सबसे उत्तम है। किसी भी तरह के आडम्बर, पाखंडवाद और धार्मिक कुरीतियों में विश्वास नहीं करते थे।समाज में फैली वैमनस्यता को दूर करना उनकी प्राथमिकता थी। प्रो. सुमन ने बताया कि समाज के वंचित, पिछड़े और दलित वर्ग के लोगों को सामाजिक विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए संत शेरसिंह जीवन पर्यंत प्रयास करते रहे। आजादी के बाद देश में आर्थिक संकट और गरीबी से जनता तबाह हो रही थी। उस समय समाज के उपेक्षित और वंचित वर्गों का जीवन बेहतर बनाने के लिए उनके बीच कार्य करना बहुत जरूरी था। ऐसी स्थिति में समाज सेवा बहुत हिम्मत का काम था। क्योंकि देश की आर्थिक स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं थी। तमाम विपरीत परिस्थितियों में संत शेरसिंह ने समाज सेवा का कार्य स्वयं के प्रयास से शुरू किया। उन्होंने अपने गाँव में समाज के उपेक्षित वर्गों के लिए समुदाय भवन, बीस सूत्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत भूमि का वितरण कराना व भूमिहीनों को सरकार से आवासीय प्लाट दिलवाना तथा युवा पीढ़ी को कबीर साहेब के विचारों से अवगत कराना जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए। प्रो.सुमन का कहना है कि ऐसे समाज सुध ारक के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए समाज के प्रबुद्ध वर्ग को आगे आना चाहिए, जिससे कि उपेक्षित और वंचित समाज का जीवन बेहतर हो सके। संत शेरसिंह रिसर्च एण्ड एजुकेशनल ट्रस्ट की स्थापना का उद्देश्य भी सामाजिक समरसता और मानवता की स्थापना करना है। संत शेरसिंह ट्रस्ट 11 अक्टूबर 2026 में शिक्षा, साहित्य,पत्रकारिता तथा समाज सेवा के क्षेत्र में कार्य कर रहे 20 महान विभूतियों को सम्मानित करता रहा है। ट्रस्ट का यह कार्य आगे भी जारी रहेगा। प्रो.हंसराज सुमन ने संत शेरसिंह के महापरिनिर्वाण दिवस पर अक्टूबर में होने वाले सम्मान समारोह की घोषणा करते हुए बताया है कि 11 अक्टूबर 2026 को दिल्ली विश्वविद्यालय पीजीडीएवी कॉलेज में प्रोफेसर मनोज कुमार कैन को इस वर्ष का अंतर्राष्ट्रीय कबीर रत्न अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा । इसके अलावा प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. हरिओम दहिया ,अंग्रेजी की विदुषी प्रो.संगीता मित्तल,प्रो.संदीप कुमार,प्रो. प्रमोद कुमार,जज श्री जगमोहन सिंह , डॉ.के.योगेश,भू वैज्ञानिक प्रो.विंध यावासिनी पांडेय , युवा भूगोल शास्त्री डॉ.सुभाष आनंद,प्रो.गीता सहारे,डॉ. विकास यादव–युवा नेता, डॉ.बलवान सिंह बिबयान–संपादक ,स्टार सवेरा,श्री सत्यपाल बौद्ध– संपादक–दैनिक सीमांत रक्षक,डॉ. पदम गंगोत्रा,श्री सत्यपाल बौद्ध,संसद टीवी के एंकर वरिष्ठ पत्रकार डॉ. मनोज वर्मा,आज तक डिजिटल न्यूज से मानसी मिश्रा आदि को शाल,प्रशस्ति पत्र,पटका,स्मृति चिन्ह और अन्य सामग्री देकर सम्मानित करेगा। प्रो.मनोज कैन को सम्मान स्वरूप 11 हजार रुपये, शॉल,स्मृति चिन्ह,पटका व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करेगा। हंसराज जी ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रो.मनोज कुमार कैन,शिक्षक कवि ,लेखक एवं आलोचक के होने के साथ–साथ इनका पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उल्लेखनीय योगदान है।दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज के हिंदी विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं । इन्हें दो दर्जन सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है । इन्होंने नाटक/ एकांकी एवं आलोचना की पुस्तकें लिखी है तथा निरंतर युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन कर रहे हैं। प्रो कैन विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्थानों में सक्रिय भूमिका निभाकर समाज को जागृत करने का बड़ा काम कर रहे हैं।इनकी सृजनशीलता, कर्मठता और अनेक सेवाओं को देखते हुए ट्रस्ट इन्हें सम्मानित करते हुए गौरवान्वित अनुभव कर रहा है । ट्रस्ट की उपाध्यक्ष सुश्री पल्लवी प्रियदर्शिनी ने बताया है कि इस रिसर्च एण्ड एजुकेशनल ट्रस्ट के अंतर्गत समाज में किन्हीं कारणों से पीछे रह गए बच्चों को शिक्षा प्रदान कराना, स्कूल छोड़कर चले गए बच्चों को जागरूक कर पुनः स्कूल तक लाना, उन्हें शिक्षा दिलाना ट्रस्ट की प्राथमिकता रहा है। बच्चों को शिक्षा, खेल, विज्ञान, मीडिया के क्षेत्रों में प्रतिभा सम्पन्न बनाना इस ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य रहा है। स्त्री शिक्षा को ध्यान में रखते हुए बालिकाओं को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना तथा अभावग्रस्त बालिकाओं को उनकी शिक्षा के लिए मदद करना ट्रस्ट के प्रमुख कार्य रहे हैं। मिल मजदूरों तथा कृषि क्षेत्र के मजदूरों के बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान कर उन्हें कौशल आधारित शिक्षा के द्वारा बेहतर जीवनयापन के योग्य बनाना ट्रस्ट का कार्य रहा है। इस ट्रस्ट ने अपने सामाजिक कार्यों का विस्तार जनजातीय क्षेत्रों में भी किया है। वहाँ के लोगों से संपर्क करते हुए उनके बच्चों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना तथा जनजातीय क्षेत्र को देश की मुख्य धारा में शामिल करने का कार्य प्राथमिकता के आधार पर किया गया है। ट्रस्ट के सदस्य डॉ. योगेंद्र पाटिल ने कहा कि फिलहाल यह ट्रस्ट एक व्यापक सामाजिक फलक पर कार्य कर रहा है। दलित समाज के उद्धार के लिए शिक्षण–प्रशिक्षण के माध्यम से कार्यक्रम चलाया जा रहा है। उनको संविधान की मुख्य धाराओं से परिचित कराया जा रहा है जिससे वे संविधान प्रदत्त अपने अधिकारों को समझ सकें। उन्होंने बताया है कि भविष्य में उच्च शिक्षा के मद्देनजर ऐसे विषयों पर शोध कार्य के लिए प्रोत्साहित भी किया जाएगा तथा ट्रस्ट से जुड़े छात्रों को शोधकार्य संबंधी सामग्री उपलब्ध कराने के लिए संस्थान कटिबद्ध रहेगा। ऐसे शोधार्थियों के छात्रवृत्ति की व्यवस्था ट्रस्ट द्वारा की जाएगी। दलित और पिछड़े वर्ग के छात्रों को सरकारी अनुदान और छात्रवृत्ति उपलब्ध कराने के लिए भी ट्रस्ट सहयोग करता रहेगा। संत श्री शेरसिंह के महापरिनिर्वाण के अवसर पर शेरसिंह फाउंडेशन के सदस्यों, कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त बहुत से सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ता भी शामिल हुए। सभी आगंतुकों ने संत शेरसिंह के सामाजिक कार्यों की चर्चा करते हुए उनको आगे बढ़ाने की बात कही। दिल्ली विश्वविद्यालय एससी/ एसटी, ओबीसी टीचर्स फोरम के अध्यक्ष प्रो. के.पी.सिंह ने संत शेरसिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ट्रस्ट के समक्ष प्रस्ताव रखा कि – यह ट्रस्ट दिल्ली के गांवों में गरीब परिवारों के बच्चों की शिक्षा तथा उनके कॅरियर संबंधी विशेष कार्यशाला का आयोजित कराए जिससे कि उपेक्षित समाज के लोगों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहन मिले। उन्होंने आगे कहा कि ट्रस्ट द्वारा किसी भी विषय में कमजोर विद्यार्थियों के लिए विशेष कोचिंग क्लास की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके अलावा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए ट्रस्ट के सदस्यों को व्यवस्था करनी चाहिए जिससे कि दलित, पिछड़े समाज के छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं में बेहतर परिणाम दे सकें। संत शेरसिंह के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके किए गए कार्यों को आगे बढ़ाया जाए और उनके विचारों को समाज में प्रचारित किया जाए। उन्होंने समाज सेवा का जो रास्ता दिखाया है उसके अनुसरण की आज जरूरत है। उनके सपनों को साकार करने के लिए आज की पीढ़ी को अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। प्रोफेसर के.पी.सिंह के प्रस्ताव को ट्रस्ट ने सर्व सम्मति से स्वीकार किया और जल्द ही इस दिशा में कार्य शुरू करने के लिए कटिबद्धता जताई। संत शेरसिंह को याद करते हुए उनके समकालीन लोगों ने अपने संस्मरण साझा किए। लोगों ने उनके कार्यों को समाज सुधार से संबोधित किया। आज जब समाज में बहुत सी विकृतियाँ आ गई हैं, चारो तरफ विघटन और विभाजन होने लगा है। जाति, धर्म और क्षेत्रीयता की भावना बढ़ने लगी है ऐसे में संत शेरसिंह के विचारों के प्रचार प्रसार की जरूरत महसूस होने लगी है। प्रबुद्ध वक्ताओं के विचार थे कि यह ट्रस्ट सक्रिय हो कर लोगों के बीच उनके विचारों को बैनर पोस्टर और पम्फलेट के जरिए लोगों में साझा करें। कार्यक्रम के अंत में डॉ . योगेंद्र पाटिल ने आए हुए विशिष्ट जनों का धन्यवाद किया ।

संपादकीय

उम्मीद पर जल्द ही पानी फिर गया

अमेरिका ने ऐसा रुख अपनाया है, जैसे दोनों पक्षों के बीच युद्ध कभी हुआ ही नहीं हो! उधर ईरान का नजरिया है कि 39 दिन के युद्ध ने समीकरण बदल दिए हैं और वह अपनी बात मनवाने की स्थिति में है। ईरान और अमेरिकाध इजराइल के शांति समझौते की दिशा में बढ़ने की जागी उम्मीद पर जल्द ही पानी फिर गया। ईरान के होरमुज डलडमरूमध्य को फिर से बंद करने के बाद अब दोनों तरफ से मोर्चाबंदी तेज होने की खबरें हैं। लेबनान में युद्धविराम लागू होने और उसके बाद ईरान के होरमुज जल मार्ग को खोलने का एलान करते ही जिस तरह डॉनल्ड ट्रंप ने ताबड़तोड़ सोशल मीडिया पोस्ट डाले, संकेत हैं कि उनसे बात फिर बिगड़ गई। अमेरिकी राष्ट्रपति ने संभवतरू वैसे दावे भी कर दिए, जिन पर सहमति नहीं बनी थी और जिनसे ईरान के समर्पण कर देने का संदेश जाता था। नतीजतन, ईरान ने जवाबी कार्रवाई कर दी। वैसे भी दोनों पक्षों के आकलन में खाई इतनी चौड़ी है कि किसी जल्द समाधान की गुंजाइश नहीं बनती। पहले इस्लामाबाद में हुई प्रत्यक्ष वार्ता और फिर पाकिस्तान की मध्यस्थता में जारी परोक्ष बातचीत में अमेरिका ने इस तरह रुख अपनाया है, जैसे दोनों पक्षों के बीच युद्ध कभी हुआ ही नहीं हो! उधर ईरान का नजरिया ऐसा है कि 39 दिन के युद्ध ने समीकरण बदल दिए हैं और अब वह अपनी बातें मनवाने की स्थिति में है। ईरान इस नतीजे पर था कि उसके दबाव में अमेरिका ने लेबनान में युद्धविराम के लिए इजराइल को मजबूर किया। इसके बाद होरमुज जल मार्ग को सशर्त खोल कर उसने अगली सौदेबाजी की जमीन तैयार की। मगर, ट्रंप ने होरमुज की नौसैनिक घेराबंदी जारी रखने का एलान कर ईरान के इस कदम को निष्प्रभावी कर दिया। साथ ही उन्होंने दावा किया कि ईरान अपना संवर्धित यूरेनियम किसी अन्य देश को सौंपने पर राजी हो गया है। संकेत हैं कि इससे ईरान में इस्लामी रिवोल्यूशनरी गार्ड कोर (आआरजीसी) और सख्त रुख रखने वाले अन्य समूहों में तीखी प्रतिक्रिया हुई। इससे कूटनीतिक नजरिया अपना रहे ईरानी अधिकारी सख्त रुख अपनाने पर मजबूर हो गए। इस तरह फिर से युद्ध का साया लौट आया है। ये लड़ाई दुनिया में गंभीर किस्म का ऊर्जा एवं आर्थिक संकट पहले ही खड़ा कर चुकी है। अब ये फिर तेज हुई, तो संकट और भयानक रूप ग्रहण कर सकता है।

सोमनाथ से सिंदूर तक– पुनरुत्थानशील भारत की भावना

पीयूष गोयल

75 वर्ष पहले किया गया भव्य सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण और प्राण–प्रतिष्ठा भारत के सभ्यतागत गौरव की पुनर्स्थापना का निर्णायक क्षण था। इसने भारत की उस दृढ़ता और संकल्प को पुनरू स्थापित किया, जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के श्विकसित भारत 2047च्य मिशन का मूल आधार है। इस पवित्र उपलब्धि की 75वीं वर्षगांठ राष्ट्र को भारतीय सभ्यता की मजबूत नींव और शक्ति पर सर्वोच्च विश्वास प्रदान करती है, जो 1,000 वर्षों तक कट्टरपंथियों द्वारा मंदिर पर किए गए भीषण हमलों को झेलने के बाद भी और अधिक सशक्त होकर उभरी। गुजरात के शांत समुद्र तट पर स्थित यह मंदिर हर आक्रमण के बाद खंडहरों से अपनी पूरी भव्यता के साथ फिर उठ खड़ा हुआ। कई मायनों में इसका इतिहास भारत के अतीत का प्रतिबिंब है, जहाँ हमारे शांतिप्रिय लोगों ने अपनी आस्था, संस्कृति और विरासत पर हुए क्रूर हमलों के बाद फिर से मजबूती से वापसी की। जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, जिस प्रकार सोमनाथ को नष्ट करने के लिए बार–बार षड्यंत्र और प्रयास हुए, उसी प्रकार विदेशी आक्रमणकारियों ने सदियों तक भारत को समाप्त करने की कोशिश की। फिर भी न तो यह पूजनीय तीर्थ नष्ट हुआ और न ही भारत। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि सोमनाथ पर हमलों का उद्देश्य लूटपाट से ज़्यादा खतरनाक था। उन्होंने कहा, यदि हमले केवल लूट के लिए होते, तो एक हजार वर्ष पहले हुई पहली बड़ी लूट के बाद ही रुक गए होते। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सोमनाथ की पवित्र मूर्ति को अपवित्र किया गया, मंदिर के स्वरूप को बार–बार बदला गया। और हमें यह सिखाया गया कि सोमनाथ को केवल लूट के लिए नष्ट किया गया था। घृणा, उत्पीड़न और आतंक का यह क्रूर इतिहास हमसे छिपाया गया। नेहरू का विरोध– स्वतंत्रता के बाद सरदार पटेल ने सोमनाथ के पुनर्निर्माण के मिशन का नेतृत्व किया। यह नवस्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय आत्मविश्वास की प्रारंभिक अभिव्यक्तियों में से एक था। लेकिन इस प्रयास की राह में भी मुश्किलें आईं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने इसके ऐतिहासिक लोकार्पण समारोह में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के शामिल होने का औपचारिक तौर पर विरोध किया। इसके बावजूद राष्ट्रपति ने 11 मई 1951 को मंदिर का लोकार्पण किया। सदियों के क्रूर उत्पीड़न के बाद इस पुनर्निर्माण ने भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण और सभ्यता पर गर्व के बीज बोए। काशी विश्वनाथ और उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर के पुनरुद्धार से लेकर अयोध्या में भव्य राम मंदिर तकय केदारनाथ के पुनर्जीवन से लेकर असंख्य धरोहर स्थलों के संरक्षण तक कृ भारत अपनी सभ्यता की कहानी को गरिमा और उद्देश्य के साथ पुनरू स्थापित कर रहा है। इन प्रयासों से पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार एवं व्यापार के अनेक अवसरों का सृजन हो रहा है। वैश्विक पहचान– सोमनाथ की ही भांति भारत भी और अधिक सशक्त होकर उभरा है। यह विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था होने के साथ–साथ अपनी समृद्ध विरासत और आधुनिकता के अद्वितीय संगम के लिए वैश्विक पहचान बना रहा है। 2014 में जब देश भारी बहुमत से मोदी सरकार को सत्ता में लाया, तो संयुक्त राष्ट्र महासभा ने रिकॉर्ड 175 देशों के समर्थन से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव पारित किया। योग आज एक वैश्विक वेलनेस मुहिम बन चुका है, जिसने दुनिया की सभी संस्कृतियों के लोगों को लाभ पहुंचाया है। एक दशक बाद, प्रधानमंत्री मोदी ने पश्चिम एशिया में संयुक्त अरब अमीरात सरकार द्वारा उपहार में दी गई भूमि पर बने एक भव्य मंदिर का लोकार्पण किया। इससे पहले, प्रधानमंत्री ने बहरीन में 200 वर्ष पुराने मंदिर के पुनर्निर्माण कार्य का शुभारंभ किया था। वह नियमित रूप से प्रवासी भारतीयों से संवाद करते हैं जिससे वे भारतीय सांस्कृतिक विरासत का गौरवशाली दूत बन जाते हैं। आयुष और योग का वैश्वीकरण–भारत की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों से जुड़े पेशेवरों के लिए वैश्विक अवसरों का सृजन करना, हाल के वर्षों में भारत द्वारा विकसित देशों के साथ किए गए मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। हमारे कारीगरों, श्रमिकों, किसानों, मछुआरों, छोटे व्यवसायों और स्टार्टअप्स के लिए लाभकारी वैश्विक अवसरों का सृजन करने के साथ–साथ ये समझौते प्रधानमंत्री के विकास भी, विरासत भी के विजन को आगे बढ़ाते हैं। हाल ही में न्यूजीलैंड के साथ संपन्न एफटीए पारंपरिक चिकित्सा और समग्र स्वास्थ्य सेवाओं में भारत की वैश्विक पहुँच में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसमें आयुष चिकित्सकों और योग प्रशिक्षकों के साथ–साथ भारतीय सांस्कृतिक एवं ज्ञान–आधारित पेशेवरों को न्यूजीलैंड में कार्य करने के लिए वीजा कोटा प्रदान किया गया है।

वैश्विक संकट के दौर में दूरगामी सोच का परिणाम है प्रधानमंत्री की अपील

डॉ. राजेन्द्र

ऐसा नहीं है कि भारत विदेशी मुद्रा के मामलें में संकट में हो बल्कि वास्तविकता तो यह है कि 10 अप्रेल, 2026 के आंकड़ों की ही बात करें तो भारत का विदेशी मुद्रा भण्डार आज उच्चतम स्तर पर है। 700 बिलियन अमेरिकी डालर से अधिक का विदेशी मुद्रा भण्डार भारत के पास है। एक मोटे अनमुन के अनुसार आगामी 11 माह से अधिक समय तक आयात मांग की पूर्ति इस राशि से आसानी से हो सकती है। विदेशी मुद्रा भण्डार से एफसीए यानी कि विदेशी मुद्रा संपत्ति, स्वर्ण भण्डार और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में आरक्षित राशि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। पर इसके सबके बावजूद भविष्य के संभावित संकट के हालातों से निपटने की आवश्यक तैयारियां समय रहते पूरी की जाती है तो यही दूरदृष्टि कहलाती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भविष्य के वैश्विक हालात साफ दिखाई दे रहे हैं। हालातों में सुधार की संभावना निकट भविष्य में दिखाई भी नहीं दे रही है। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केवल एक वर्ष के लिए अनावश्यक खर्चों में कटौती का आग्रह देशवासियों से किया है। इसमें ईंधन बचाना, सोना नहीं खरीदने, विदेशी यात्राओं व विदेशों में शादी नहीं करने, खाने के तेल के उपयोग में 10 प्रतिशत तक की कटौती व खेती में रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में 50 प्रतिशत तक की कटौती करने का सुझाव प्रमुख है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के देशवासियों से आग्रह को लेकर आलोचक भले ही मृद्दा बनाने का प्रयास करें पर वैश्विक हालात आज सबके सामने हैं। देशवासियों को मालूम है कि पेट्रोलियम उत्पादों इनमें कच्चे तेल से लेकर गैस आदि आदि शामिल है आदि के लिए आयात पर निर्भरता अधिक है। देश में 979 अरब अमेरिकी डॉलर का सालाना आयात होता है जिसमें से करीब 38 प्रतिशत आयात केवल और केवल पेट्रोलियम पदार्थों पर ही हो रहा है। सोना–चांदी और इलेक्ट्रोनिक्स के साथ ही फर्टिलाइजरों के मामलें में भी विदेशों पर निर्भरता अधिक है। करीब 10 प्रतिशत राशि सोने के आयात पर खर्च होती है। यदि समग्र रुप से देखा जाए तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने तेलंगाना के सिकन्दराबाद से देशवासियों से जो आग्रह किया है वह ऐसा नहीं है जो किसी भी तरह से देशवासियों के लिए दुबिधाजनक हो। वैश्विक संकट के चलते देश–दुनिया की इकोनोमी पर पड़ने वाले संभावित असर को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की देशवासियों से दूरदृष्टियुक्त अपील से कोरोना काल की याद ताजा हो रही है तो पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री की तत्कालीन अन्न संकट के दौरान सप्ताह में एक दिन के उपवास के आग्रह की और चला जाता है। अमेरिका–इजरायल और ईरान युद्ध सीजफायर के आसार अभी दिखाई नहीं दे रहे हैं तो दूसरी और दोनों ही देशों की हठधर्मिता के कारण हार्मुज जलडमरुमध्य से परिवहन बाधित होने का परिणाम दुनिया के देशों के सामने हैं। दुनिया के देशों को यह समझ लेना होगा कि अमेरिका–ईरान युद्ध केवल दो या तीन देशों के बीच युद्ध तक सीमित ना होकर इसके असर से आज कोई देश दूर दूर तक अछूता नहीं दिखाई दे रहा है। यह दो देशों की अहम् की लड़ाई ना होकर समूची मानवता को प्रभावित करने वाले हालात है। आज दुनिया के देशों की एक दूसरे पर निर्भरता बढ़ी है। बिना किसी अन्य देश के सहयोग के कोई भी देश अपने स्तर पर अपने देशवासियों की आवश्यकताओं को पूरा करने की स्थिति में नहीं है। आर्थिक उदारीकरण के बाद से आज विश्व विश्व ग्राम में परिवर्तित हो गया है। एक बात यह भी साफ हो जानी चाहिए कि आज अमेरिका–इजरायल और ईरान संकट का हल निकल भी आता है तब भी वैश्विक हालात सामान्य होने में लंबा समय लग जाएगा। युद्धरत देश यह समझने की कोशिश नहीं कर रहे कि उनके अहम् के चलते दुनिया आज सालों पीछे जा रही है। विकास बाधित हो रहा है, आर्थिक गतिविधियां प्रभावित हो रही है और हालात दिन प्रतिदिन बिगड़ते ही जा रहे हैं। आज सबको मालूम है कि अमेरिका–ईरान युद्ध के चलते रास्ता अवरुद्ध होने के कारण कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस का आयात प्रभावित हो रहा है। हार्मुज का रास्ता अवरुद्ध है। हालात की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि ईरान को प्रतिदिन 2800 करोड़ रुपए के कच्चे तेल को समुद्र में बहाना पड़ रहा है। तेल उत्पादक अन्य देश भी संकट के दौर से गुजर रहे हैं। ऐसे में जीवाश्म ईंधन के उपयोग में कमी लाने, सार्वजनिक परिवहन वाहनों के उपयोग और वाहन पूलिंग का एक साल का सुझाव या आग्रह दूरदृष्टिपूर्ण व देशहित में ही माना जाना चाहिए। इसके साथ ही इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग का बढ़ावा देना भविष्य के पर्यावरण संकट से बचाव और हरित उर्जा को बढ़ावा देने में ही सहायक हो सकेगा। इसी तरह से हमारे देश में सोने के खरीद के प्रति खास मोह रहता आया है पर हालातों को देखते हुए व्यापक राष्ट्रहित में एक साल के लिए सोना नहीं खरीदे तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। इसी तरह से केवल शानों शोकत के लिए विदेशी यात्राएं करने से बचने की सलाह और विदेशों में शादी करने के स्थान पर स्थानीय पर्यटन और देश में ही एक से एक

बेहतरीन वेडिंग डेस्टिनेशंस पर शादी करने से जहां खर्च कम होगा, देश के डेस्टिनेशनों की वैश्विक पहचान के साथ ही विदेशी पूंजी भी बचेगी। इसी तरह से रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से खेती और खेतों की उर्वरा शक्ति प्रभावित होने से आज देश दो चार हो रहा है। जैविक खाद और जैविक खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया जा रहा है। ऐसे में रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को सीमित करने का आग्रह निश्चित रुप से सकारात्मक ही है। जहां तक मीटिंग्स का प्रश्न है कोविड़ के बाद से सरकारी और गैरसरकारी स्तर पर अधिकांष मीटिंग्स अब हाईब्रीड मोड पर ही होने लगी है। वर्कफ्राम होम को अवश्य प्रोत्साहित किया जा सकता है। लब्बो–लबाब यह है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जो देशवासियों से आग्रह किया है उनमें से एक भी ऐसा आग्रह नहीं है जिससे हमारे दैनिक जीवन चर्या प्रभावित हो रही हो। एक भी ऐसा बिन्दु नहीं है जिससे आमजन प्रभावित हो रहा हो। सीधे सीधे एक साल के लिए अपनी आदत व आवश्यकताओं में जरुरी बदलाव के लिए कहा जा रहा है ताकि वैश्विक संकट का असर देश की अर्थव्यवस्था व देश के आमलोगों को प्रभावित ही ना कर सकें। एक साल सोना नहीं खरीदने या ईवी वाहन या सार्वजनिक वाहन का उपयोग या विदेशों में शादी आदि कार्यक्रम आयोजित ना करने या विदेश घूमने नहीं जाने से कोई खास फर्क नहीं पड़ने वाला हैं। इसलिए इन सबसे बचने से देश वैश्विक हालातों का अधिक कुशलता से मुकाबला कर सकेगा ।

संवेदना से सुधरेंगे, केदारनाथ यात्रा के संकट

वीरेन्द्र

केदारपुरी जिस भूखण्ड में बसी है उसके नीचे हिमोड और भूस्खलनों का मलबा है। इस क्रम में यहां के श्ड्रैनेज पैटर्नश पर भूमिगत जल–प्रवाह, भण्डारित जलराशि की स्थिति व श्सरफेस रनऑफश के पैटर्न व आंकड़ों का अध्ययन करिये। इन विश्लेषणों से समझा जा सकता है कि भू–धंसाव के जोखिम के बीज तो यहां ही जम रहे हैं। तेज बारिश में तात्कालिक रिसाव से भले ही बच जायें। केदारनाथ समुद्र तल से करीब 11,750 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। मंदाकिनी नदी इसकी सीमा पर है। वर्ष 2026 के 22 अप्रैल को केदारनाथ धाम के कपाट खुलने के ग्यारह दिन पहले मंदिर के पीछे के ग्लेशियल क्षेत्र से भारी भूस्खलन हुआ है। गौरीकुंड से केदारनाथ तक के पैदल मार्ग में आती बाधाओं को दूर किया जा रहा है। वर्ष 2024 के 30 जून को केदारनाथ मंदिर के दर्शन के लिए आये श्रध्दालुओं ने पांच बजे सुबह बर्फ की बौछार मंदिर के पीछे गांधी सरोवर के क्षेत्र में देखी। कुछ का कहना था कि उन्हें लगा बर्फ के पहाड़ ही टूट गये हों। वर्ष 2022–23 में भी कहते हैं ऐसा हुआ था। जून–जुलाई 2024 का संदर्भ हो या आज का अथवा केदारनाथ महा त्रासदी 2013 का, केदारनाथ पैदल मार्ग के पास के क्षेत्रों में पारिस्थितिकीय जोखिमों में बढ़ोत्री ही हो रही है।31 जुलाई 2024 को लिंचौली जंगल चट्टी के ऊपर बादल विस्फोट से लिंचौली व भीमबली में बेहद खौफनाक मंजर दिखा था। केदारनाथ से गौरीकुंड के बीच हजारों यात्री फंसे हुये थे। लिंचौली में फंसे यात्री ज्यादा मुसीबत में थे क्योंकि न सिर्फ मंदाकिनी नदी, बल्कि बगल के पहाड़ से आता नाला भी पानी के साथ मलवा ला रहा था। ऐसी घटनाओं को आम कहने का प्रचलन बहुत बढ़ गया है। पूरा तंत्र ऐसे बयान देने लगता है। यदि ये सामान्य हो गई हैं, तो जलवायु बदलाव के दौर में केदारनाथ धाम की सुरक्षा के लिये विशेष सतर्कता बरतने की जरूरत है, लेकिन अब इतनी सुविधायें जुटा ली गई हैं कि प्रतिदिन वहां बीस–पच्चीस हजार यात्री समा सकते हैं। इतने ही रास्तों पर भी रहते हैं। इससे सीमित क्षेष्त्र में हजारों इंसानों की उपस्थिति व गतिविधि से श्हीट आइलैंड्सश बनने की संभावनायें बढ़ी हैं। खुद यात्री कहते हैं अब तेज धूप झेलना मुश्किल होता है।पता नहीं केदारनाथ के तापक्रम परिवर्तन पर अलग से अध्ययन हुये हैं कि नहीं, किन्तु पूरे हिंदुकुश हिमालय पर ही जलवायु बदलाव के खतरे बढ़े हैं। पश्चिमोत्तर हिमालय में 1991 के बाद औसत तापमान 0.66 डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ गया है। हिमालयी ग्लेशियरों के पिघलने की दर दुगुनी हो गई है और पहाड़ बर्फ–विहीन हो रहे हैं, परन्तु केदारनाथ जैसी जगहों के आसपास यदि ये होता है तो हम वैश्विक वजहों से इसे होना नहीं कह सकते। वैश्विक कारणों के साथ उन पर स्थानीय आघाती कारण भी जुड़ रहे हैं। फरवरी 2021 में नीति घाटी में ग्लेशियर टूटने से धौली गंगा में भारी बाढ़ आई थी।केदारपुरी जिस भूखण्ड में बसी है उसके नीचे हिमोड और भूस्खलनों का मलबा है। इस क्रम में यहां के श्ड्रैनेज पैटर्नश पर भूमिगत जल–प्रवाह, भण्डारित जलराशि की स्थिति व श्सरफेस रनऑफश के पैटर्न व आंकड़ों का अध्ययन करिये। इन विश्लेषणों से समझा जा सकता है कि भू–धंसाव के जोखिम के बीज तो यहां ही जम रहे हैं। तेज बारिश में तात्कालिक रिसाव से भले ही बच जायें, परन्तु जमीन में जल का रिसाव भूमिगत मिटटी, चट्टानों की दरारों, अपभ्रंशों आदि की मार्फत कमजोर करता है। ऐसे में भूस्खलन व भू–धंसाव की समस्या बढ़ जाती है।हेलीकॉप्टरों की आवाजाही भी यहां काफी हो रही है, निर्माण कार्यों का भार भी बढ़ रहा है। भूकम्प सक्रिय क्षेत्र तो यह है ही। सेवानिवृत्त मेजर जनरल भुवनचंद्र खंडूरी मुख्यमंत्री से पहले एक विशेषज्ञ इंजीनियर थे। महाआपदा के बाद सितम्बर 2013 में जब कांग्रेस की राज्य सरकार ने श्केदारनाथ विकास प्राधिकरणश बनाने की मंशा जाहिर की तो उन्होंने इस पर आपत्ति जताई थी। उनका कहना था कि 2008 में उनकी सरकार ने केदारनाथ, बदरीनाथ के आसपास निर्माणों पर पूरी तरह रोक लगा दी थी। जरूरत यह भी है कि मंदाकिनी नदी के श्फ्लड–जोनश से छेड़छाड़ न हो। यह हिम–पोषित नदी है। दिसम्बर, जनवरी, फरवरी में गिरी बर्फ इसके लिये महत्वपूर्ण होती है। इसे बरसात, हिमनद और पिघलती बर्फ सभी से पानी मिलता है, किन्तु इसमें श्ग्लेशियर लेक आउटबर्स्टश से जोखिम भी पैदा हो रहे हैं। उत्तराखंड में ग्लेशियरों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रह गया है। पगडंडी मार्गों पर हिमस्खलन का जोखिम हर साल बढ़ रहा है। लगभग हर साल ही पुराने पैदल मार्ग को चालू करने की तैयारियों के साथ मार्ग के हिमस्खलनों से सतर्क रहने की आधिकारिक चेतावनी भी आ जाती है। ऐसी चेतावनियों से कहीं श्रद्धालुओं की आमद कम न हो जाये, इसलिये लोग राहों पर हिमनदों के टुकड़ों के जोखिमों को अब सामान्य भी कहने लगे हैं, किन्तु तथ्य है कि ग्लेशियरों के टूटने की ही तरह ग्लेशियरों का फिसलकर बस्तियों व मोटर मार्गों या ट्रैकिंग राहों में आकर जान–माल का नुकसान करना पूरे भारत में बढ़ा है। मार्च 2021 में पिथौरागढ़ में ही दारमा घाटी में ऐसा हो चुका है। चार अप्रैल 2023 को उत्तरपूर्वी सिक्किम में जवाहरलाल नेहरू हाइवे पर, जो राजधानी गंगटोक व चीन सीमा पर स्थित नाथूला दर्रे व लोकप्रिय पर्यटन स्थल नाथूला को भी जोड़ता है, सुबह ग्यारह बजे पहुंचे ग्लेशियर ने 35 पर्यटकों व उनके वाहनों को चपेट में ले लिया था और सात पर्यटकों की मृत्यु हो गई थी। जलवायु बदलाव के कारण आज ऊंचाइयों में भी हिमपातों की जगह बरसात हो रही है। जून 2013 की आपदा की बात करें तो उत्तराखंड के संदर्भ में वह शुरुआती मानसून ही था। केदारध्ााम जैसे हिमालयी क्षेत्रों में लगातार हेलीकाप्टरों की उड़ानों व भूकम्पकीय झटकों से ताजी बर्फ के फिसलाव व टूटन का खतरा तो रहेगा ही। केदारघाटी में जगह–जगह सड़कों पर भूस्खलन ही नहीं, भू–धंसाव, मलबा फिसलाव व भू–कटाव के जोन भी बने हैं। जुलाई–अगस्त में ये काफी सक्रिय हो जाते हैं।

सोमनाथ आस्था, संकल्प और पुनर्जागरण की अनंत धारा

श्रीमद्भगवद्गीता के इस श्लोक में निहित भाव और भारतीय सभ्यता की सनातन चेतना का सबसे जीवंत स्वरूप गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र के दक्षिणी तट पर स्थित सोमनाथ मंदिर में दिखाई देता है। बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम माने जाने वाले सोमनाथ ने इतिहास में अनेक आक्रमणों और विनाश को सहा, लेकिन हर बार फिर खड़ा हुआ और उसकी आरती, घंटियों और श्रद्धा की ध्वनि कभी थमी नहीं। भारतीय इतिहास के हजारों वर्षों में सनातन धर्म ने कई तरह की चुनौतियों का सामना किया। राजनीतिक परिवर्तन, आक्रमण और सत्ता परिवर्तन के दौर में मंदिरों, मठों और ज्ञान केंद्रों को नुकसान पहुंचाया गया, उनकी संरचनाएं बदली गईं और उन्हें संरक्षण देने वाली व्यवस्थाएं भी प्रभावित हुईं। इसके बावजूद भारतीय आध्यात्मिक परंपरा न केवल जीवित रही, बल्कि समय के साथ स्वयं को पुनर्स्थापित भी करती रही। इसकी सबसे बड़ी शक्ति यही रही कि संस्थागत क्षति और राजनीतिक अस्थिरता के बावजूद इसकी आत्मा कभी समाप्त नहीं हुई। प्राचीन और मध्यकालीन भारत में मंदिर केवल पूजा के स्थल नहीं थे, बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन के भी केंद्र थे। राजसत्ता से उनके गहरे संबंध के कारण वे युद्ध और संघर्ष के समय सबसे पहले निशाने पर आए। महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ पर किया गया आक्रमण इतिहास की सबसे चर्चित घटनाओं में से एक है। फारसी ग्रंथों में इसे विजय के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि भारतीय परंपरा में इसे पीड़ा, संघर्ष और पुनर्निर्माण की कथा के रूप में याद किया गया। लेकिन ऐतिहासिक सत्य यह है कि सोमनाथ कभी श्रद्धा से विलुप्त नहीं हुआ। चालुक्य शासकों सहित अनेक राजाओं ने इसका पुनर्निर्माण कराया और यह निरंतर आस्था का केंद्र बना रहा। ऐसी अनेक घटनाएं भारत के अन्य हिस्सों में भी देखने को मिलती हैं। श्रेयरू सोमनाथ और काठियावाड़ के अन्य मध्यकालीन मंदिर। 1931। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, खंड एक्सएलवी, इंपीरियल सीरीज। कलकत्तारू भारत सरकार। सोमनाथ का इतिहास केवल एक आक्रमण की कहानी नहीं है। प्राचीन काल से ही प्रभास पाटन एक महान तीर्थभूमि रहा है। इसे विभिन्न ग्रंथों और परंपराओं में प्रभास–पट्टन, शिव–पट्टन और प्रभास–तीर्थ जैसे नामों से जाना गया। यहां तीन पवित्र नदियों का संगम होता है और यही वह स्थान माना जाता है जहां भगवान श्रीकृष्ण के देहत्याग के बाद उनका अंतिम संस्कार हुआ। निकट ही वैराग्य क्षेत्र और गोपी तालाब स्थित हैं, जहां से गोपी चंदन प्राप्त होता है। इस संपूर्ण क्षेत्र की यात्रा को भारतीय तीर्थ परंपरा में अत्यंत पवित्र माना गया है। काठियावाड़ और गुजरात की प्राचीन धरोहरों पर आधारित कई ऐतिहासिक अभिलेखों और पुरातात्विक रिपोर्टों में भी इस क्षेत्र का उल्लेख मिलता है। सोमनाथ भारत की समावेशी सांस्कृतिक परंपरा का भी प्रतीक है। यह शैव और वैष्णव परंपराओं के अद्भुत संगम का केंद्र है और हमें यह याद दिलाता है कि भारतीय संस्कृति हमेशा से बहुलतावादी और समावेशी रही है। स्वतंत्र भारत में सोमनाथ के पुनर्जागरण का आधुनिक अध्याय 12 नवंबर 1947, दीपावली के दिन आरंभ हुआ, जब देश के प्रथम उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने इस पवित्र स्थल का दौरा किया। विभाजन की पीड़ा के बीच सरदार पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया। यह केवल एक मंदिर के पुनर्निर्माण का निर्णय नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय चेतना को पुनर्जीवित करने का एक ऐतिहासिक प्रयास था। इसके बाद सोमनाथ को एक सांस्कृतिक और बौद्धिक केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्य प्रारंभ हुआ। 11 मई 1951 को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की उपस्थिति में प्रातरूकाल संपन्न हुई प्राण–प्रतिष्ठा ने पूरे राष्ट्र की सांस्कृतिक स्मृति और आत्मविश्वास को नई शक्ति प्रदान की। आज जब भारत श्भारतञ्च2047च्य की ओर बढ़ रहा है, तब सोमनाथ से जुड़े ये सभ्यतागत मूल्य और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। तकनीकी बदलाव और वैश्विक अनिश्चितताओं के इस दौर में भारत दुनिया को यह संदेश देता है कि विकास का अर्थ करुणा को त्यागना नहीं है और शक्ति का अर्थ संयम को छोड़ देना नहीं है। सोमनाथ हमें सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व केवल सामर्थ्य से नहीं, बल्कि स्मृति, विवेक और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता से निर्मित होता है। इसी दृष्टि से सोमनाथ स्वाभिमान पर्व 2026–27 की परिकल्पना की गई है। यह वर्षभर चलने वाला राष्ट्रीय आयोजन सोमनाथ ज्योतिर्लिंग की आध्यात्मिक शक्ति, सांस्कृतिक निरंतरता और सभ्यतागत चेतना को समर्पित है। सदियों तक अनेक बार विध्वंस झेलने के बाद भी जिस प्रकार समाज के सामूहिक संकल्प से सोमनाथ पुनरू स्थापित होता रहा, वह भारत की सांस्कृतिक आत्मशक्ति और राष्ट्रीय स्वाभिमान का जीवंत उदाहरण है। 8 से 11 जनवरी 2026 के बीच प्रारंभ हुए इस पर्व के माध्यम से दो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पड़ावों को स्मरण किया जा रहा है – 1026 में सोमनाथ पर हुए प्रथम दर्ज आक्रमण के एक हजार वर्ष और स्वतंत्रता के बाद 1951 में पुनर्निर्मित मंदिर के पुन उद्घाटन के 75 वर्ष। इस आयोजन का उद्देश्य सोमनाथ को राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक चेतना और सामूहिक स्मृति के प्रतीक के रूप में स्थापित करना है। 11 मई 2026 को आयोजित होने वाले प्रमुख राष्ट्रीय कार्यक्रम तक देशभर में यात्राएं, सांस्कृतिक आयोजन, संवाद, शैक्षिक कार्यक्रम और विभिन्न ज्योतिर्लिंगों, राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों, जिलों और शिवालयों में समन्वित गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, जो सोमनाथ ट्रस्ट के अध्यक्ष भी हैं, सोमनाथ ने एक नए पुनर्जागरण का दौर देखा है। प्रशासनिक सुधार, आधारभूत संरचना का विकास, धरोहर संरक्षण और सांस्कृतिक पहलों ने सोमनाथ को एक जीवंत आध्यात्मिक केंद्र के रूप में और अधिक सशक्त किया है। पर्यावरणीय संतुलन और महिला–सशक्तिकरण आधारित सेवा पहलों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि भारतीय सभ्यतागत मूल्य आधुनिक जिम्मेदारियों और समावेशिता के साथ कैसे आगे बढ़ सकते हैं। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व आधुनिक समाज को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का एक प्रयास है। यह हमें याद दिलाता है कि सोमनाथ केवल एक मंदिर नहीं है। इसकी वास्तविक शक्ति उन मूल्यों, परंपराओं और जिम्मेदारियों में है, जिन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया जाता रहा है। इसी कारण आज सोमनाथ केवल पुनर्निर्मित मंदिर नहीं, बल्कि एक जीवंत तीर्थ है। इक्कीसवीं सदी में आगे बढ़ते भारत के लिए सोमनाथ एक महत्वपूर्ण संदेश देता है कृ कोई भी सभ्यता तब मजबूत रहती है जब वह अपनी जड़ों से जुड़ी रहे, समय के साथ स्वयं को ढालती रहे और सभी को साथ लेकर चले। सोमनाथ की यह विरासत हमें निरंतर प्रेरित करती रहे कृ उद्देश्यपूर्ण निर्माण करने के लिए, संतुलित आचरण के लिए और अपनी पहचान के प्रति सजग रहते हुए ।

सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार में निरंतर सक्रिय हैं प्रवीण कुमार उर्फ बबलू यादव जी

पटना/बिहार। राष्ट्रीय युवा वाहिनी नेशनल वालंटियर भाजपा के प्रदेश महासचिव व्यापार प्रकोष्ठ बिहार, प्रवीण कुमार उर्फ बबलू यादव जी द्वारा सनातन धर्म के प्रचार–प्रसार एवं सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में लगातार सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्रम में उन्होंने बाबा भोलेनाथ के मंदिर में श्रद्धा एवं आस्था के प्रतीक स्वरूप एक विशाल घंटा लगवाकर धार्मिक सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर संगठन के पदाधिकारियों एवं स्थानीय श्रद्धालुओं ने कहा कि सनातन धर्म केवल पूजा–पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज को एकजुट करने, सेवा, संस्कार और राष्ट्रभक्ति का मार्ग दिखाने वाला महान जीवन दर्शन है। प्रवीण कुमार उर्फ बबलू यादव जी लगातार बिहार प्रदेश में व्यापार प्रकोष्ठ को मजबूत करने

के साथ–साथ नारी शक्ति को संगठन से जोड़ने का कार्य भी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय युवा वाहिनी नेशनल वालंटियर भाजपा का उद्देश्य समाज के हर वर्ग को जोड़ते हुए सनातन संस्कृति की रक्षा और प्रचार करना है। बिहार प्रदेश में संगठन तेजी से विस्तार कर रहा है और युवाओं, व्यापारियों एवं मातृशक्ति को जोड़कर सामाजिक एवं धार्मिक जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। संगठन के कार्यकर्ताओं ने बताया कि प्रवीण कुमार उर्फ बबलू यादव जी सदैव धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं और युवाओं को सनातन धर्म के प्रति जागरूक करने का कार्य कर रहे हैं। बाबा भोलेनाथ के मंदिर में घंटा स्थापना को श्रद्धालुओं ने धर्म और आस्था के प्रति समर्पण का प्रतीक बताया। राष्ट्रीय युवा वाहिनी नेशनल वालंटियर भाजपा ने संकल्प लिया है कि पूरे बिहार प्रदेश में सनातन धर्म, सामाजिक समरसता, नारी सम्मान एवं राष्ट्रहित के कार्यों को और अधिक मजबूती के साथ आगे बढ़ाया जाएगा।

हाई बीपी को हल्के में लेना खतरनाक, समय पर जांच और नियमित इलाज जरूरी

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। भागदौड़ भरा रुटीन, टेंशन, गलत खानपान और शारीरिक गतिविधियों में कमी के कारण हाई ब्लड प्रेशर यानी हाइपरटेंशन की समस्या तेजी से बढ़ रही है।ॅभ्व के आंकड़ों के अनुसार दुनियाभर में 100 करोड़ से अधिक लोग इससे पीड़ित हैं और प्रतिवर्ष लगभग 01 करोड़ लोग इससे अपनी जान गंवाते हैं। यही कारण है कि इसे साइलेंट किलर कहा जाता है। इसका सबसे बड़ा कारण लोगों को इसका पता न चलना है। लगभग 46 प्रतिशत लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें बीपी का शिकार होने का पता ही नहीं होता क्योंकि उन्हें सामान्य रूप से किसी तरह की परेशानी नहीं होती है। हाई ब्लड प्रेशर यानी हाइपरटेंशन एक ऐसी बीमारी है, जिसके शुरुआती लक्षण अक्सर दिखाई नहीं देते, लेकिन समय के साथ यह शरीर के कई महत्वपूर्ण अंगों को नुकसान पहुंचा सकती है। आने वाले वर्ल्ड हाइपरटेंशन डे से पहले मेदांता हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने लोगों से नियमित बीपी जांच कराने और इलाज को बीच में न छोड़ने की अपील की। डायरेक्टर क्लिनिकल एंड प्रिवेंटिव कार्डियोलॉजी, मेदांता हॉस्पिटल, डॉ. आर के सरन ने बताया कि हाइपरटेंशन को "साइलेंट किलर" कहा जाता है क्योंकि अधिकांश मरीजों में शुरुआती दौर में कोई खास तकलीफ नहीं होती। कई लोग यह मान लेते हैं कि जब उन्हें परेशानी नहीं हो रही तो उनका बीपी सामान्य

होगा, जबकि ऐसा जरूरी नहीं है। उन्होंने कहा कि सामान्य ब्लड प्रेशर लगभग 120ध्80 माना जाता है, लेकिन दिनभर की गतिविधियों और तनाव के कारण इसमें उतार–चढ़ाव हो सकता है। केवल एक बार बीपी बढ़ा मिलने पर घबराने की जरूरत नहीं होती लेकिन लगातार हाई बीपी मिलने पर तुरंत डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। डायरेक्टर इंटरवेंशन कार्डियोलॉजी, मेदांता हॉस्पिटल, डॉ. पी के गोयल ने कहा कि हाई बीपी का सही समय पर पता लगना बेहद जरूरी है। एक बार बीमारी की पुष्टि हो जाए तो नियमित इलाज और दवाओं का लगातार सेवन करना आवश्यक होता है। कई मरीज दवाएं शुरू करने के बाद बीपी सामान्य होने पर खुद ही दवा बंद कर देते हैं, जो खतरनाक साबित हो सकता है। उन्होंने कहा कि उम्र बढ़ने के साथ हाई बीपी का खतरा भी बढ़ता है, इसलिए नियमित जांच बेहद जरूरी है। समय पर जांच और लगातार इलाज से हाई बीपी से होने वाली जटिलताओं को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। डायरेक्टर इंटरवेंशन कार्डियोलॉजी, मेदांता हॉस्पिटल, डॉ. एस के द्विवेदी ने कहा कि हाई बीपी से बचाव के लिए लोगों को अपने खानपान और लाइफस्टाइल पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। खाने में नमक कम करें, तला–भुना और ज्यादा मसालेदार भोजन कम लें, नियमित व्यायाम करें, वजन नियंत्रित रखें और तनाव से दूर रहने की कोशिश करें। साथ ही 40 वर्ष की उम्र के बाद नियमित बीपी जांच को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए। लंबे समय तक अनियंत्रित हाई बीपी रहने से हार्ट अटैक, हार्ट फेल्योर, किडनी फेल्योर और ब्रेन स्ट्रोक जैसी गंभीर समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। कई मामलों में आंखों की रोशनी पर भी असर पड़ सकता है।

खेतासराय में गाजी मियां मेले पर प्रशासन का प्रतिबंध,नहीं लगेगा मेला

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

सूद गाजी मियां के मेले पर प्रशासन ने पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया है। शासन के निर्देश के बाद पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी लगातार मेला क्षेत्र में निगरानी कर रहे हैं, ताकि बिना अनुमति किसी प्रकार का आयोजन न हो सके।

खेतासराय थाना क्षेत्र में पुलिस ने मेला स्थल और आसपास के इलाकों में कड़ा पहरा बैठा दिया है। प्रशासन का कहना है कि इस बार न तो झूले, सर्कस, चरखी और अस्थायी दुकानें लगेंगी और न ही किसी प्रकार की सार्वजनिक गतिविधि की अनुमति दी जाएगी। पुलिस की सक्रियता के चलते मेले से जुड़े मुजावर और दफाली भी खुलकर सामने नहीं आ रहे हैं।

मेले की पारंपरिक तैयारियों से जुड़े शुकरुल्ला दफाली, मोछू दफाली, फिरोज जोगी, अलाऊद्दीन जोगी और उजागिर जोगी ने दबी जुबान स्वीकार किया कि शासन की अनुमति न मिलने के कारण इस बार मेला आयोजित नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रशासन की सख्ती को देखते हुए किसी प्रकार का जोखिम नहीं लिया जाएगा।

जिला प्रशासन के अनुसार, प्रदेश में संभल और बहराइच में ऐसे आयोजनों पर रोक लगाए जाने के बाद जौनपुर में भी सुरक्षा और कानून–व्यवस्था को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। जिला मजिस्ट्रेट सैमुअल पॉल एन. ने शाहगंज तहसील प्रशासन और पुलिस अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि बिना अनुमति किसी भी प्रकार का आयोजन नहीं होने दिया जाए।

शाहगंज के क्षेत्राधिकारी गिरीन्द्र सिंह ने कहा कि शासन के निर्देशों का सख्ती से पालन कराया जाएगा। यदि कोई व्यक्ति या समिति बिना अनुमति मेला लगाने का प्रयास करती है तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई करते हुए जेल भेजा जाएगा।

खेतासराय थानाध्यक्ष प्रदीप कुमार सिंह, कस्बा प्रभारी अनिल कुमार पाठक, उप निरीक्षक तारीक अंसारी, संजय पांडेय, कांस्टेबल आशुतोष तिवारी, अंबिका यादव और अभिमन्यु सिंह महिला पुलिस बल के साथ लगातार क्षेत्र में निगरानी कर रहे हैं। बताया जाता है कि खेतासराय में लगने वाला यह मेला पूर्वांचल के विभिन्न जिलों से आने वाले हजारों लोगों की भीड़ के कारण चर्चित रहा है। इस बार प्रशासन की सख्ती के चलते पहले से दुकान और अन्य व्यवस्थाओं की बुकिंग भी नहीं हुई। कुछ छोटे दुकानदार पहुंचे जरूर, लेकिन पुलिस की समझाइश के बाद वापस लौट गए।

दहेज उत्पीड़न से तंग आ विवाहिता की आत्महत्या, पति और सास गिरफ्तार

लखनऊ, (संवाददाता)। राजधानी के वजीरगंज थाना क्षेत्र में दहेज उत्पीड़न से परेशान होकर विवाहिता द्वारा आत्महत्या किए जाने के मामले में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए मृतका के पति और सास को गिरफ्तार कर लिया है। दोनों आरोपियों को मुखबिर की सूचना पर कुण्डरी, रकाबगंज क्षेत्र से पकड़ा गया। पुलिस ने दहेज हत्या और दहेज प्रताड़ना से संबंधित गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर आगे की विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है।पुलिस के अनुसार, 10 मई 2026 को अयोध्या निवासी माता बक्श शर्मा ने थाना वजीरगंज में लिखित तहरीर देकर आरोप लगाया था कि उनकी पुत्री को उसके पति और ससुराल पक्ष द्वारा दहेज की मांग को लेकर लगातार शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा था। आरोप है कि उत्पीड़न से तंग आकर उनकी पुत्री ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।शिकायत के आधार पर थाना वजीरगंज में मुकदमा संख्या 107/2026 धारा 85/80(2) भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) तथा दहेज प्रतिषेध अधिनियम की धारा 3ध्4 के तहत मामला दर्ज किया गया। मुकदमा दर्ज होने के बाद से पुलिस नामजद आरोपियों की तलाश में जुटी हुई थी। सोमवार को थाना वजीरगंज पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि मामले में वांछित आरोपी अपने वर्तमान पते कुण्डरी, रकाबगंज क्षेत्र में मौजूद हैं। सूचना मिलते ही पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी की और दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।गिरफ्तार आरोपियों की पहचान अंकित शर्मा उर्फ पुरुषोत्तम (28) पुत्र स्वर्गीय चन्द्रकेश शर्मा निवासी ग्राम नसीपुर, थाना असन्दरा, जनपद बाराबंकी तथा उसकी मां शिवलली शर्मा (55) पत्नी स्वर्गीय चन्द्रकेश शर्मा के रूप में हुई है। दोनों वर्तमान में कुण्डरी, रकाबगंज, थाना वजीरगंज क्षेत्र में रह रहे थे।

राजधानी में आईटी सिटी योजना में ईडी का पेच, 100 करोड़ की जमीन अटैच

लखनऊ, (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ में सुल्तानपुर रोड पर एलडीए की वेलनेस सिटी योजना में माफिया अतीक अहमद की 50 बीघा से अधिक जमीन का मामला सामने आने के बाद अब आईटी सिटी योजना में ईडी का पेच फंस गया है। यहां करीब 100 करोड़ रुपये की ऐसी जमीन सामने आई है, जो मनी लॉन्ड्रिंग के जरिये खरीदी गई है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने इसे अटैच कर दिया है। इससे योजना की रफ्तार पर असर पड़ सकता है। एलडीए सुल्तानपुर रोड पर किसान पथ के किनारे करीब 1054 हेक्टेयर में आईटी सिटी योजना विकसित कर रहा है। इसमें 11 गांवों की जमीन लैंडपूलिंग से ली गई है। एलडीए निशुल्क जमीन ले रहा है और बदले में 25 प्रतिशत विकसित जमीन प्लॉट के रूप में दे रहा है। 10 एकड़ से अधिक जमीन देने वालों को 50 प्रतिशत विकसित जमीन दी जा रही है। एलडीए एक साल में करीब 300 हेक्टेयर जमीन ही लैंडपूलिंग के जरिये भूस्वामियों से ले चुका है। बाकी जमीन लेने के लिए अब अधिग्रहण की प्रक्रिया अपनाई जाएगी। इसकी जांच के दौरान सामने आया कि योजना में शामिल कई गांवों की जमीन को ईडी ने अटैच किया है। जानकारों ने बताया कि एक बिल्डर ने मनी लॉन्ड्रिंग के जरिये ये जमीन खरीदी हैं। सूत्रों ने बताया कि रमेश कुमार नामक व्यक्ति के नाम से यह जमीन वर्ष 2013 और उसके आसपास खरीदी गई हैं। ईडी ने कई रजिस्ट्री की जानकारी जिला प्रशासन व तहसील के अधिकारियों को भेज भी दी है। बक्कास, सिकंदरपुर अमोलिया, सिद्धपुरा, परेहटा, रकीबाबाद, मोहारी खुर्द, मोहारी कला, खुजौली, भटवारा, सोनई कंजेहरा और पहाड़नगर टिकरिया। एलडीए वीसी प्रथमेश कुमार ने बताया कि अधिग्रहण के समय जब जिलाधिकारी जमीन के मुआवजे की घोषणा करते हैं तो उस समय सारे मामले निस्तारित हो जाते हैं।

संक्षिप्त खबरें

लखनऊ पुलिस की बड़ी सफलता– उत्तरी जोन सर्विलांस सेल ने बरामद किए 101 गुमशुदा मोबाइल

लखनऊ, (संवाददाता)। राजधानी में गुम हुए मोबाइल फोन तलाशने के अभियान में कमिश्नरेट पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस उपायुक्त उत्तरी जोन कार्यालय की सर्विलांस सेल ने अथक प्रयासों के बाद विभिन्न कंपनियों के 101 गुमशुदा मल्टीमीडिया मोबाइल फोन बरामद कर उनके वास्तविक मालिकों को सौंप दिया। बरामद मोबाइलों की अनुमानित कीमत करीब 21 लाख रुपये बताई गई है। अपने खोए हुए मोबाइल वापस पाकर लोगों के चेहरों पर खुशी लौट आई और उन्होंने पुलिस टीम की जमकर सराहना की।पुलिस आयुक्त अमरेन्द्र कुमार सेंगर के निर्देश पर नागरिकों के खोए हुए मोबाइल फोन की बरामदगी के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में उत्तरी जोन थाना क्षेत्रों से मोबाइल गुमशुदगी के संबंध में प्राप्त प्रार्थना पत्रों को सर्विलांस पर लगाकर उनकी खोजबीन शुरू की गई थी।पुलिस उपायुक्त उत्तरी गोपाल कृष्ण चौधरी और अपर पुलिस उपायुक्त उत्तरी ट्विंकल जैन के पर्यवेक्षण में सर्विलांस सेल और क्राइम टीम ने तकनीकी विश्लेषण और लगातार निगरानी के माध्यम से गुमशुदा मोबाइलों की तलाश की। उ0नि0 दीपक कुमार के नेतृत्व में टीम ने विभिन्न जनपदों और लखनऊ के अलग–अलग क्षेत्रों से कुल 101 मल्टीमीडिया मोबाइल फोन बरामद किए।रविवार को पुलिस उपायुक्त उत्तरी कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बरामद मोबाइल फोन उनके वास्तविक धारकों को सौंपे गए। लंबे समय से अपने मोबाइल फोन खो चुके लोगों ने जब अपने मोबाइल वापस पाए तो उनके चेहरे खिल उठे। नागरिकों ने पुलिस आयुक्त कार्यालय, पुलिस उपायुक्त उत्तरी और सर्विलांस टीम के प्रयासों की सराहना करते हुए।

देशहित के हर फैसले पर राजनीति कर रही सपा – पंकज चौधरी

लखनऊ, (संवाददाता)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष एवं केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने समाजवादी पार्टी और उसके नेताओं पर निशाना साधते हुए कहा कि विपक्ष को अब देशहित के हर निर्णय में राजनीति दिखाई देने लगी है। उन्होंने आरोप लगाया कि जब देश वैश्विक चुनौतियों के बीच आत्मनिर्भरता, संसाधनों के संरक्षण और राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देते हुए आगे बढ़ रहा है, तब समाजवादी पार्टी जैसे दल जनता को भ्रमित करने और नकारात्मक राजनीति करने में लगे हैं।पंकज चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से ऊर्जा बचत, स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने, अनावश्यक खर्चों में संयम और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की अपील की है। यह किसी प्रकार की कमजोरी नहीं, बल्कि जिम्मेदार और दूरदर्शी नेतृत्व की पहचान है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने देशवासियों को साझी जिम्मेदारी का संदेश दिया है, लेकिन समाजवादी पार्टी इसे भी राजनीतिक नजरिए से देखकर भ्रम फैलाने का प्रयास कर रही है।प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि भारत आज दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। कोरोना महामारी, वैश्विक आर्थिक मंदी और अंतरराष्ट्रीय बाजार की अस्थिरता के बावजूद देश ने विकास की गति बनाए रखी है। उन्होंने कहा कि डिजिटल क्रांति, आधारभूत संरचना, स्टार्टअप, रक्षा उत्पादन, रेलवे, एक्सप्रेसवे, एयरपोर्ट और मेट्रो जैसे क्षेत्रों में भारत नई ऊंचाइयों को छू रहा है और दुनिया भारत के निर्णायक नेतृत्व तथा स्थिर नीतियों की सराहना कर रही है।

सतत विकास लक्ष्यों को शिक्षा, शोध और सामाजिक सरोकारों से जोड़ रहा बीबीएयू, 'ग्रीन एवं क्लाइमेट रेजिलिएंट कैंपस' बनने की ओर बढ़ा विश्वविद्यालय

लखनऊ, (संवाददाता)। बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (बीबीएयू) सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को संस्थागत व्यवस्था, शैक्षणिक गतिविधियों, अनुसंधान, नवाचार, सामाजिक सहभागिता और प्रशासनिक नीतियों में प्रभावी रूप से समाहित करने की दिशा में व्यापक स्तर पर कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय प्रशासन इसे केवल एक औपचारिक प्रक्रिया न मानकर सामाजिक उत्तरदायित्व, संस्थागत पारदर्शिता, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता के रूप में देख रहा है। कुलपति प्रो. राज कुमार मित्तल के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय ने शिक्षा, शोध और सामाजिक सरोकारों को वैश्विक सतत विकास एजेंडा से जोड़ने की व्यापक रणनीति तैयार की है।कुलपति प्रो. राज कुमार मित्तल ने कहा कि विश्वविद्यालय में सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में चल रही पहल केवल एक रणनीतिक प्राथमिकता नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और समावेशी विकास जैसे मूल्यों का प्रतिबिंब है। उनका कहना है कि शिक्षा, अनुसंधान और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से ऐसे नेतृत्वकर्ताओं को तैयार करने की प्रतिबद्धता है, जो स्थानीय से वैश्विक स्तर तक सतत परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त कर सकें। विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को शिक्षित करना नहीं, बल्कि उन्हें सामाजिक रूप से संवेदनशील, पर्यावरण के प्रति जागरूक और जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करना भी है।विश्वविद्यालय ने अपने विजन के अनुरूप यह मान्यता दी है कि उच्च शिक्षण संस्थान केवल डिग्री प्रदान करने के केंद्र नहीं होते, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, नीति निर्माण, ज्ञान सृजन और सतत विकास के वाहक की भूमिका निभाते हैं। इसी सोच के तहत विभिन्न विभागों में शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, ग्रामीण विकास और नवाचार जैसे विषयों पर केंद्रित गतिविधियां संचालित की जा रही हैं।सतत विकास लक्ष्य समिति के अध्यक्ष प्रो. नवीन कुमार अरोड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय ने एसडीजी के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए दीर्घकालिक और व्यवस्थित कार्ययोजना तैयार की है। इसके अंतर्गत प्रत्येक विभाग को उसकी विषयगत विशेषज्ञता के अनुरूप एसडीजी आवंटित किए गए हैं। विभागीय स्तर पर शिक्षकों को एसडीजी समन्वयक के रूप में नामित किया गया है, जबकि विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक विभाग से एक छात्र और एक छात्रा को 'सस्टेनेबल एम्बेसडर' नियुक्त किया गया है। ये एम्बेसडर सतत विकास लक्ष्यों के प्रति जागरूकता फैलाने और गतिविधियों में नेतृत्वकारी भूमिका निभाएंगे। विश्वविद्यालय में एमपीडीसी के माध्यम से एसडीजी आधारित पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, ताकि विद्यार्थियों में इन लक्ष्यों के प्रति बुनियादी समझ विकसित की जा सके। साथ ही प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए एसडीजी लिट्रेसी मॉड्यूल शुरू करने की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों को सतत विकास लक्ष्यों और संकेतकों के अनुरूप मैप किया जा रहा है। इसमें गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वच्छ जल, स्वच्छ ऊर्जा, आर्थिक विकास, नवाचार, जलवायु कार्रवाई और सामाजिक न्याय जैसे वैश्विक लक्ष्यों को प्रमुखता दी जा रही है।विश्वविद्यालय में अंतरविषयी और अनुभवात्मक शिक्षण पद्धति को बढ़ावा देते हुए फील्ड विजिट, सामुदायिक परियोजनाएं, केस स्टडी, स्वास्थ्य जागरूकता अभियान, जल प्रबंधन सर्वेक्षण और कृषि आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

मलिहाबाद में मामूली विवाद बना खूनी संघर्ष– शराब दुकान कर्मचारी की रॉड से हत्या

लखनऊ, (संवाददाता)। राजधानी के मलिहाबाद थाना क्षेत्र में रविवार सुबह मामूली कहासुनी ने खूनी रूप ले लिया। ग्राम ढेध्ढेमऊ स्थित सरकारी शराब की दुकान पर कार्यरत एक कर्मचारी की लोहे की रॉड से हमला कर हत्या कर दी गई, जबकि बीच–बचाव करने पहुंचे एक अन्य युवक को भी चोटें आईं। घटना के बाद पूरे इलाके में सनसनी फैल गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। आरोपी वारदात के बाद फरार हो गया, जिसकी तलाश में पुलिस टीमें लगाई गई हैं।पुलिस के मुताबिक, रविवार सुबह करीब 9 बजे थाना मलिहाबाद पुलिस को सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम ढेध्ढेमऊ क्षेत्र में एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई है। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया। जांच के दौरान मृतक की पहचान अजय जायसवाल (35) पुत्र रामऔतार जायसवाल निवासी सैय्यद बाड़ा, थाना मलिहाबाद के रूप में हुई। अजय ग्राम ढेध्ढेमऊ में स्थित सरकारी शराब की दुकान पर कार्यरत था।प्रारंभिक जांच और स्थानीय लोगों से पूछताछ में सामने आया कि रविवार सुबह अजय जायसवाल का गांव निवासी ननक्के कश्यप (35) पुत्र राम स्वरूप कश्यप से किसी बात को लेकर विवाद हो गया था। देखते ही देखते विवाद इतना बढ़ गया कि आरोपी ने गुस्से में लोहे की रॉड उठाकर अजय के सिर पर ताबड़तोड़ हमला कर दिया। सिर पर गंभीर चोट लगने से अजय लहूलुहान होकर मौके पर गिर पड़ा और उसकी मौत हो गई।घटना के दौरान जब रज्जन (35) नामक युवक ने बीच–बचाव का प्रयास किया तो वह भी हमले की चपेट में आकर घायल हो गया।

चुनाव खत्म होते ही जनता पर बढ़ाया आर्थिक बोझ, अब गैस-तेल कम इस्तेमाल करने की सलाह दे रही सरकार – संजय सिंह

लखनऊ, (संवाददाता)। आम आदमी पार्टी के उत्तर प्रदेश प्रभारी एवं राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला बोलते हुए आरोप लगाया कि पांच राज्यों के चुनाव समाप्त होते ही सरकार ने जनता का "बोझ" उठाने से हाथ खड़े कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान सरकार जनता को भरोसा दिलाती रही कि देश में किसी चीज की कोई कमी नहीं है, लेकिन चुनाव खत्म होते ही लोगों को पेट्रोल–डीजल, गैस और यहां तक कि सोने के इस्तेमाल में कटौती करने की सलाह दी जाने लगी।सोमवार को अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जारी बयान में संजय सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं कहा है कि पिछले दो महीने से सरकार जनता का बोझ उठा रही थी। उन्होंने आरोप लगाया कि इसका सीधा अर्थ यह है कि चुनाव तक जनता को राहत देने का दिखावा किया गया, लेकिन जैसे ही मतदान प्रक्रिया समाप्त हुई, सरकार ने आर्थिक बोझ जनता के कंधों पर डालना शुरू कर दिया।आप सांसद ने कहा कि चुनाव के समय सरकार दावा कर रही थी कि देश में किसी प्रकार का कोई संकट नहीं है और सभी संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। लेकिन चुनाव समाप्त होते ही लोगों से कहा जाने लगा कि पेट्रोल–डीजल कम इस्तेमाल करें, गैस कम जलाएं, खाने के तेल का उपयोग सीमित करें और यहां तक कि एक साल तक सोना न खरीदें। उन्होंने कहा कि सरकार जनता को हर प्रकार की कटौती के लिए प्रेरित कर रही है और इसे "देशभक्ति" का नाम दिया जा रहा है।संजय सिंह ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार महंगाई, बेरोजगारी और आर्थिक संकट को भी राष्ट्रभक्ति से जोड़कर जनता पर मानसिक दबाव बनाने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि आम लोगों से कहा जा रहा है कि शादी–ब्याह और सामाजिक आयोजनों में भी खर्च कम करें, लेकिन दूसरी ओर सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोगों के ऐशोआराम, विदेशी यात्राओं और भव्य आयोजनों में कोई कमी नहीं दिखाई देती।उन्होंने कहा कि चुनाव समाप्त होने के तुरंत बाद सरकार ने कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमतों में 993 रुपये की वृद्धि कर दी। उनके अनुसार इसका सीधा असर छोटे दुकानदारों, रेहड़ी–पटरी वालों, चाय विक्रेताओं और मेहनतकश वर्ग पर पड़ेगा, जो इन्हीं सिलेंडरों का इस्तेमाल करते हैं। इसके साथ ही पांच किलो वाले छोटे सिलेंडर की कीमत में 261 रुपये की बढ़ोतरी भी गरीब और निम्न आय वर्ग के लोगों पर अतिरिक्त

बोझ डालेगी।संजय सिंह ने कहा कि देश की जनता को यह समझना होगा कि चुनाव के समय केवल वोट लेने के लिए वादे किए जाते हैं, जबकि चुनाव खत्म होते ही युवाओं, गरीबों और मध्यम वर्ग को आर्थिक संकट और बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। उन्होंने पटना की घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि जब नौजवान रोजगार और अधिकार मांगते हैं तो उन्हें लाठियों से जवाब दिया जाता है।उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार जनता को यह समझाने की कोशिश कर रही है कि महंगाई में जीना ही देशभक्ति है, गैस कम इस्तेमाल करना देशभक्ति है और जरूरतों में कटौती करना भी राष्ट्रहित है। जबकि दूसरी ओर भाजपा की रैलियां, रोड शो और राजनीतिक कार्यक्रम लगातार जारी रहते हैं, जिनमें बड़े पैमाने पर संसाधनों का उपयोग किया जाता है।

15 साल, एक लाश, दो दावे और अब विवेचक की भी मौत- शिखा दुबे हत्याकांड जो आज भी गोरखपुर की सबसे बड़ी मिस्ट्री

गोरखपुर, (संवाददाता)। कैंट थाना क्षेत्र में वर्ष 2011 में हुई चर्चित शिखा दुबे हत्याकांड केस की सुनवाई अहम मोड़ पर आकर अटक गई है। केस के मुख्य विवेचक अश्वनी सिन्हा की कैंसर बीमारी के चलते मौत हो चुकी है, जिसके बाद उनका डेथ सर्टिफिकेट अदालत में दाखिल कर दिया गया है। इसके बाद सोमवार को हुई सुनवाई में उनकी तस्दीक (सत्यापन) की प्रक्रिया पूरी की गई। अगली सुनवाई के लिए 30 मई की तारीख तय की गई। मामले में नए विवेचक की तैनाती के बाद ही आगे की कार्यवाही बढ़ सकेगी। अब तक किसी नए विवेचक की तैनाती नहीं हो सकी है। साल 2011 में शिखा दुबे हत्याकांड ने लोगों को हैरान कर दिया था। जिस शिखा को लोग मरा समझ रहे थे, वह अपने प्रेमी दीपू के साथ सोनभद्र में रह रही थी। प्रेमी–प्रेमिका को जेल भेजने के साथ पुलिस पड़ताल में बरामद लाश सोनभद्र की पूजा की बताई गई। जेल से निकलकर दोनों ने अलग–अलग अपने घर बसा लिए, मगर इस हत्याकांड से जुड़ी फाइल 15 साल से तारीखों में उलझ कर रह गई। मामले में अब गवाही अंतिम चरण में है। इसी बीच विवेचक की कैंसर से मौत हो गई। तब सुर्खियों में रहे इस हत्याकांड में हैरानी वाली बात यह थी कि गोरखपुर में किसी और महिला की लाश को अपनी बेटी का समझ कर उसके पिता अंतिम संस्कार कर चुके थे। पुलिस ने घटना का खुलासा किया। फिर शिखा, उसके प्रेमी दीपू यादव समेत तीन लोगों

को जेल भिजवाया गया। जमानत पर सब बाहर आ गए और इधर गवाह, साक्ष्य न होने की वजह से कोर्ट में सिर्फ तारीख पर तारीख ही पड़ रही है। पुलिस ने शिखा की जिस सहेली को गवाह बनाया था, वह किराये का कमरा छोड़कर चली गई और आज कहां है, यह कोई नहीं जानता। दूसरा गवाह मिर्जापुर का वह ढाबा वाला था, जिसके ढाबे से पूजा को लेकर लोग गोरखपुर आए थे। वह भी गवाही के लिए आगे नहीं आया। हत्याकांड में एडीजी द्वितीय कोर्ट में अगली तारीख पांच दिसंबर 2023 को है। पुलिस को इसमें साक्ष्य को साबित करना है। घटना 11 जून 2011 की है। सिंघड़िया में एक युवती की लाश मिली थी। उसकी कदकाठी और उम्र से पता चला कि वह इंजीनियरिंग कॉलेज के कमलेशपुरम कॉलोनी इलाके से गायब युवती शिखा दुबे है। उसके पिता को बुलाया गया। रिश्तेदार भी जुटे, सबने माना लाश शिखा की ही है। इस दौरान पिता रामप्रकाश दुबे ने पड़ोसी दीपू पर हत्या की आशंका जताई और केस दर्ज करा दिया। पुलिस जांच करने पहुंची तो पता चला कि दीपू भी घर से लापता है। जांच के दौरान पुलिस को खबर मिली कि आरोपी दीपू सोनभद्र में है। सोनभद्र पहुंची पुलिस टीम तब हैरान रह गई, जब वहां केवल दीपू ही नहीं, शिखा भी मौजूद मिली। पुलिस दोनों को गिरफ्तार कर गोरखपुर लेकर आई। यहां आने के बाद शिखा ने एक ऐसी कहानी सुनाई कि पुलिस दंग रह गई।

डॉ. सुषमा भास्कर माटे ने संभाला रेलवे के प्रमुख चिकित्सा निदेशक का पदभार

गोरखपुर, (संवाददाता)। पूर्वोत्तर रेलवे को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए एक नया नेतृत्व मिल गया है। मुंबई से स्थानांतरित होकर आईं डॉ. सुषमा भास्कर माटे ने पूर्वोत्तर रेलवे के प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक का पदभार ग्रहण कर लिया है। सोमवार को पीआरकेएस के नेता विनोद राय के नेतृत्व में संघ के एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने उनसे मुलाकात की। संघ के सभी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने नई पीसीएमडी को कार्यभार संभालने पर बधाई दी। बुके और स्मृति चिह्न भेंट कर उनका भव्य स्वागत किया। मुलाकात के दौरान राय ने रेल कर्मचारियों और उनके आश्रितों को मिल रही।

मिशन शक्ति फेज – 5 के तहत महिला एसओ ने किया जागरूक

अयोध्या बुधवार को मिशन शक्ति फेज 5 के तहत महिला थानाध्यक्ष आशा शुक्ला तथा अन्य पुलिसकर्मियों ने एजीके प्रथम अपरैल ट्रेनिंग सेंटर नाका पर जाकर वहां पर मौजूद लोगों को सुरक्षा के प्रति जागरूक किया। इस मौके पर उन्होंने महिलाओं तथा बालिकाओं के विकास के लिए केंद्र तथा राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बारीकी से समझाया।उन्होंने विधवा पेंशन, वृद्धा पेंशन एवं सुकन्या योजना ,बाल विवाह

मुक्त भारत अभियान और हेल्पलाइन नंबर के बारे में बालिकाओं ध्महिलाओं को जागरूक किया गया और महिला अपराध संबंधित अपराध के बारे मे अवगत कराया गया व उन्हें किसी भी प्रकार पुलिस सहायता हेतु विमेन पावर लाइन 1090, यूपी 112, महिला हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, चाइल्ड लाइन 1098, साइबर अपराध 1930 के बारे में बताया गया। इस मौके पर महिला थानाध्यक्ष के अलावा महिला कांस्टेबल ममता देवी, राजेश तिवारी, महिमा गोस्वामी सहित अन्य महिला पुलिसकर्मी शामिल रहे।

व्यापारियों ने जमीन कब्जा करने का लगाया आरोप

गोरखपुर, (संवाददाता)। कस्बे के पुरानी हनुमानगढ़ी निवासी व्यवसायी शशि कुमार अग्रवाल और शरद कुमार अग्रवाल ने अपनी जमीन पर कुछ लोगों की ओर से अवैध कब्जे करने, धमकी और धन उगाही की कोशिश करने का आरोप लगाया है। आरोपियों पर 50 लाख रुपये मांगने का भी आरोप है। पीड़ित व्यापारियों ने मुख्यमंत्री समेत प्रशासनिक अधिकारियों को प्रार्थना पत्र भेजकर मामले की जांच कर आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। व्यापारियों का कहना है कि उन्होंने वर्ष 2019 में एक मकान और जमीन खरीदी थी। हाल ही में निर्माण कार्य शुरू कराने पर कुछ लोग लगातार आपत्ति जता रहे हैं।

अब दक्षिणांचल के खेतों की भी होगी नहर से सिंचाई, लबालब रहेगा पानी

गोरखपुर, (संवाददाता)। जिले के दक्षिणांचल में भी किसानों के खेतों की सिंचाई नहर से होगी। निर्बाध सिंचाई व्यवस्था के लिए चौधरी चरण सिंह गोला पंप नहर का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। 22.29 करोड़ रुपये की इस महत्वाकांक्षी परियोजना का दो–तिहाई कार्य पूरा हो चुका है। इसे मार्च 2027 तक पूरा करने का लक्ष्य है। इसके आधुनिकीकरण से अब टेल तक लबालब पानी पहुंचेगा। गोला और बांसगांव के करीब 50 हजार किसानों के 13 हजार हेक्टेयर खेतों की सिंचाई हो सकेगी। 1957 में गोला पंप नहर बनी थी। जरूरत के हिसाब से इसके विद्युत सब स्टेशन की क्षमता बढ़ाई नहीं गई और पंप भी पुराने हो गए। इससे सिंचाई की क्षमता कम होती गई। अब पंप नहर की आधुनिकीकरण की परियोजना में सब स्टेशन को 33/3.3 केवी से बढ़ाकर 33/11 केवी किया जा रहा है। इससे वोल्टेज की समस्या का समाधान हो जाएगा और पंप के संचालन में कोई बाधा नहीं आएगी। सब स्टेशन की क्षमता उन्नयन के अनुरूप ही एचटी और एलटी ट्रांसफार्मर का अपग्रेडेशन भी किया जा रहा है। इसके अलावा 60 क्यूसेक क्षमता के पांच होरिजेंटल स्प्लिट केसिंग ज्योति मेक पंप को बदलने का कार्य भी होगा। आधुनिकीकरण की परियोजना में 250 किलोवाट 3.3 केवी पांच एचटी मोटर को 250 किलोवाट 11 केवी के एचटी मोटर में बदला जाएगा। साथ ही मड पंप, डिवाटरिंग पंप को भी बदलकर नया लगाया जाएगा। इस कार्य से पानी का डिस्चार्ज बढ़ेगा और नहर के टेल तक पानी की उपलब्धता सुनिश्चित होगी। गोला पंप नहर के आधुनिकीकरण परियोजना के तहत भौतिक प्रगति 68 प्रतिशत है। इसे मार्च 2027 तक शत–प्रतिशत पूर्ण कर लेने का लक्ष्य है। पंप नहर के सब स्टेशन और मशीनों के अपग्रेड होने से रबी और खरीफ दोनों फसलों के दौरान समय पर पानी मिल सकेगा, जिससे पैदावार में उल्लेखनीय वृद्धि संभव होगी।

मिट्टी लदी ट्रैक्टर-ट्रॉली ने महिला को रौंदा, जिंदगी और मौत से जूझ रही

गोरखपुर, (संवाददाता)। कस्बे के बड़हलगंज–गोला मार्ग पर संगम टॉकीज के सामने अवैध मिट्टी खनन में लगी तेज रफ्तार ट्रैक्टर–ट्रॉली की चपेट में आकर एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। हादसे के बाद मौके पर अफरा–तफरी मच गई। घायल महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। फिलहाल परिजन उनका इलाज बड़हलगंज के एक निजी अस्पताल में करा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक, टाड़ा गांव निवासी इंद्रपाल मौर्य अपनी पत्नी सीमा देवी के साथ बड़हलगंज गैस एजेंसी पर गैस लेने आए थे। गैस मिलने के बाद उनका बेटा सिलेंडर लेकर घर चला गया, जबकि दंपती पैदल घर लौट रहे थे। इसी दौरान संगम टॉकीज के पास तेज रफ्तार से आ रही ट्रैक्टर–ट्रॉली ने सीमा देवी को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गईं। उनके सिर में गंभीर चोट आई है, जबकि हाथ में फ्रैक्चर बताया जा रहा है। घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों ने घायल महिला को तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। प्राथमिक उपचार के बाद

चिकित्सकों ने हालत गंभीर देखते हुए जिला अस्पताल रेफर कर दिया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई और दो ट्रैक्टर–ट्रॉली को कब्जे में लेकर पूछताछ शुरू कर दी। पुलिस मामले की जांच कर रही है। हादसे के बाद स्थानीय लोगों में आक्रोश है। लोगों का आरोप है कि बड़हलगंज क्षेत्र के दियारा इलाके में लंबे समय से अवैध मिट्टी खनन का कारोबार धड़ल्ले से चल रहा है। प्रतिदिन भोर में आधा दर्जन से अधिक ट्रैक्टर–ट्रॉलियां तेज रफ्तार से सड़कों पर दौड़ती हैं, जिससे राहगीरों की जान जोखिम में पड़ रही है।

जनता दर्शन में जिलाधिकारी ने सुनीं जनसमस्याएं

(डॉ अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या। जिलाधिकारी शशांक त्रिपाठी ने कलेक्ट्रेट स्थित अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित जनता दर्शन में आमजन की समस्याएं सुनीं।जनता दर्शन में जनपद के विभिन्न क्षेत्रों से आए लोगों ने भूमि विवाद, पेंशन, मार्ग निर्माण, राजस्व एवं अन्य जनसमस्याओं से संबंधित प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किए।जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्राप्त

शिकायतों का समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि जिन मामलों में संयुक्त जांच की आवश्यकता हो, उनमें राजस्व एवं पुलिस विभाग की संयुक्त टीम गठित कर निष्पक्ष जांच कराई जाए तथा पात्र व्यक्तियों को न्याय दिलाना सुनिश्चित किया जाए।उन्होंने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप प्रत्येक शिकायत का संवेदनशीलता एवं गंभीरता के साथ निस्तारण किया जाए तथा पीड़ित व्यक्ति को त्वरित राहत उपलब्ध कराई जाए।

संक्षिप्त खबरें

सपा मुखिया का विवादित पोस्टर देखकर आक्रोशित हुए सपा नेता

भदोही, (संवाददाता)। जिले के चौरी में सपा मुखिया अखिलेश यादव के विवादित पोस्टर लगाने पर सोमवार को जिले की राजनीति गरमा गई। पोस्टर देखते ही सपा कार्यकर्ता आक्रोशित हो गए। कार्यकर्ताओं ने पोस्टर हटा दिया। मामले की सूचना सपा जिलाध्यक्ष प्रदीप यादव को दी। सपा जिलाध्यक्ष ने जिलाधिकारी शैलेश कुमार को फोन कर शिकायत दर्ज कराई। विवादित पोस्टर लगाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। सपा जिलाध्यक्ष ने बताया कि इस तरह का विवादित पोस्टर लगाकर जिले में अशांति फैलाने काम किया जा रहा है। भाजपा नेताओं की ओर से यह पोस्टर लगाया गया है। कहा कि अगर पोस्टर लगाने वाले आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं की गई तो आंदोलन किया जाएगा। चौरी थाना क्षेत्र के चौरी रोड मोरवा पुल के पास कुछ अराजकतत्वों ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव और सपा के वरिष्ठ नेताओं आजम खां व जियाउर्हमान बर्क का आपत्तिजनक पोस्टर लगाए थे। इस पर अखिल भारतीय यादव महासंघ के पदाधिकारियों ने आपत्ति जताई। महासंघ ने अराजक तत्वों पर शहर का माहौल खराब करने का आरोप लगाते हुए सीओ भदोही को ज्ञापन सौंपा। दोषियों को चिह्नित कर सख्त कार्रवाई की मांग की। महासंघ के विधान चंद्र यादव ने बताया कि पोस्टर सुनियोजित ढंग से पार्टी और राष्ट्रीय अध्यक्ष को बदनाम करने की नियत से लगाया गया था। पोस्टर में पूर्व मुख्यमंत्री पर बिजली चोरी करने का बेबुनियाद आरोप लगाया गया था।

चार महीने में 5677 बच्चे मिले कुपोषित, डेढ़ फीसदी ही पहुंचे पुनर्वास केंद्र

भदोही, (संवाददाता)। जिले में कुपोषण उन्मूलन के लिए स्वास्थ्य विभाग सजग नहीं है। चार महीने में 5677 बच्चे कुपोषित और अति कुपोषित की श्रेणी में दर्ज हुए। वहीं जिला अस्पताल स्थित पोषण पुनर्वास केंद्र (एनआरसी) में डेढ़ फीसदी बच्चे ही पहुंचे। यह केंद्र खासतौर पर गंभीर कुपोषित बच्चों के इलाज, पोषणयुक्त आहार और नियमित चिकित्सकीय निगरानी के लिए बनाया गया है, जहां 14 दिन तक कुपोषित बच्चों की विशेष देखभाल की जाती है। जिले में 1496 आंगनबाड़ी केंद्र है। यहां पर 1.25 लाख से ज्यादा बच्चे पंजीकृत हैं। जीरो से छह वर्ष के बच्चों का हर महीने वजन किया जाता है। लंबाई, वजन आदि के आधार पर बच्चों को अति कुपोषित (सैम) और कुपोषित (मैम) की श्रेणी रखा जाता है। अप्रैल 2026 में अति कुपोषित 69 और कुपोषित 437 बच्चे चिह्नित किए गए। जनवरी से अप्रैल तक सेम 870 तो मैम 4807 बच्चे मिले। चार महीने में मात्र 74 बच्चे ही उपचार के लिए जिला अस्पताल के पोषण पुनर्वास केंद्र (एनआरसी) आए। सोमवार को संवाद न्यूज एजेंसी की टीम ने पुनर्वास केंद्र की पड़ताल की। 10 बेड वाले केंद्र में छह बच्चे भर्ती मिले। हालांकि पूर्व के महीनों में तीन से पांच बच्चे ही भर्ती हुए। जमीनी स्तर पर रेफरल और जागरूकता की प्रक्रिया कमजोर होने से व्यवस्था रास्ते से भटक जाती है। अति कुपोषित बच्चों की बड़ी संख्या गांवों और घरों तक सीमित है। उन्हें अस्पताल तक नहीं लाया जाता है। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और एएनएम स्तर पर बच्चों की पहचान तो हो रही है।

बिना सूचना बंद की रेलवे क्रॉसिंग, शहर में हर तरफ लगा जाम

उन्नाव, (संवाददाता)। बिना पूर्व सूचना के शहर के मुख्य मार्ग पर स्थित रेलवे क्रॉसिंग मरम्मत के लिए सोमवार को दो दिन के लिए बंद कर दी गई। आवास विकास बाईपास तिराहा से शहर, शुक्लागंज और कानपुर को जोड़ने वाली क्रॉसिंग बंद होने से शहर में चौतरफा जाम लग गया। इससे लोगों को भारी परेशानी हुई। रेलवे क्रॉसिंग बंद रखने की पूर्व सूचना न देने पर रेलवे और यातायात पुलिस एक–दूसरे को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। शहर और आसपास के मार्गों पर करीब 10 दिन से मरम्मत और निर्माण कार्य चल रहे हैं जिससे यातायात पहले से ही प्रभावित था। आवास विकास कॉलोनी रेलवे क्रॉसिंग (संख्या 126) सोमवार को अचानक बंद होने से समस्या और बढ़ गई। बिना पूर्व सूचना अचानक इस बदलाव से शहरवासी परेशान हो गए। जाम लगने से नौकरीपेशा लोग कार्यालय देर से पहुंचे। स्कूल जाते और छुट्टी के समय जाम में फंसे वाहनों में बैठे बच्चे पसीने से लथपथ रहे। दही औद्योगिक क्षेत्र सहित अन्य तहसील व ब्लॉकों को जाने वाले अधिकारी, कर्मचारी और कामगार भी जाम में फंसे रहे। आवास विकास कॉलोनी और अन्य ब्लॉकों से शहर आने वाले लोग मुख्य मार्ग बंद देखकर लोग लौटने लगे जिससे जाम की स्थिति और गंभीर हो गई। शहर की तरफ आने–जाने वाले लोगों ने हाईवे की तरफ से घूमकर जाने का प्रयास किया। इसके लिए पीतांबर नगर, चर्च वाली गली, नगर पालिका चौराहा, अनवार नगर और इब्राहिमाबाग मोहल्ला जैसे वैकल्पिक रास्तों का उपयोग किया गया। इन गली–मोहल्लों में भी यातायात उलझ गया। हरदोई सड़क पर चल रही मरम्मत के कारण आधा रास्ता बंद होने से वहां भी जाम लग गया। पुल के दोनों तरफ तैनात यातायात पुलिस ने बारी–बारी से वाहनों को निकाला। शहर के रोडवेज बस स्टेशन और अजगैन, पुरवा, नवाबगंज, हसनगंज के लिए चलने वाली प्राइवेट बसें भी प्रभावित हुईं। ये बसें शहर के व्यस्ततम सदर बाजार, बड़ा चौराहा और छोटा चौराहा होते हुए गांधीनगर तिराहा से गदनखेड़ा बाईपास चौराहा से गुजरीं। इससे शहर की यातायात व्यवस्था दिन भर चरमराई रही। बसों के मार्ग बदलने से यात्रियों को भी असुविधा हुई। मुख्य मार्ग की रेलवे क्रॉसिंग को दो दिन बंद रखने की पूर्व सूचना न देने पर रेलवे और यातायात पुलिस एक–दूसरे को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। रेलवे के सीनियर सेक्शन इंजीनियर मुकेश कुमार मीना का दावा है कि जिला प्रशासन और यातायात पुलिस को दो दिन पहले ही मरम्मत की सूचना दे दी गई थी। बताया कि क्रॉसिंग और दोनों तरफ ट्रैक की मरम्मत के लिए यह सूचना भेजी गई थी। उधर, सीओ ट्रैफिक अजय कुमार का कहना है कि क्रॉसिंग बंद करने का रेलवे का सूचना पत्र सोमवार को मिला। जानकारी मिलते ही विभिन्न स्थानों पर अतिरिक्त यातायात पुलिस कर्मियों को तैनात कर यातायात का संचालन कराया गया। शहर में आवास विकास रेलवे क्रॉसिंग के दोनों तरफ स्कूल हैं। केंद्रीय विद्यालय हाईवे पर दही चौकी चौराहा के पास है। सुबह जाते समय भी स्कूल वाहन जाम में फंसे और दोपहर में छुट्टी के समय भी। इससे बच्चे परेशान हो गए। अभिभावक राजीव सिंह, सुरेंद्र कुशवाहा, दिनेश कुमार, शिवकुमार शुक्ला ने बताया कि बच्चे इतनी देर जाम में फंसकर परेशान होंगे, इसका पता होता तो आज भेजते ही नहीं। तमाम बच्चे पैदल ही घर से स्कूल जाते और आते दिखे। लोकनगर निवासी सिद्धांत कुमार ने बताया कि रिश्तेदार की तबीयत खराब हो गई थी। जानकारी होने पर सात बजे उनके घर आवास विकास कॉलोनी गए थे। कार से जिला अस्पताल पहुंचाने में जाम से जूझते हुए पांच किलोमीटर का चक्कर लगाकर जिला अस्पताल पहुंचने में 45 मिनट लग गए। हिरन नगर निवासी रजनीश कुमार ने बताया कि वह प्राइवेट नौकरी करते हैं। सुबह नौ बजे जाने के लिए निकले तो पीतांबर नगर पहुंचते ही पता चला कि रेलवे क्रॉसिंग कल तक बंद रहेगी। इससे गली मोहल्लों से घूमकर जाना पड़ा।

गंगा की कटान रोकने को ड्रेजिंग का प्रस्ताव

उन्नाव, (संवाददाता)। गंगा की बदली धारा से कटान की चपेट में आए कालीमिट्टी–शिवराजपुर मार्ग और भविष्य में प्रभावित होने वाले गांवों को बचाने के लिए बांगरमऊ विधायक ने उपजिलाधिकारी, लोक निर्माण विभाग और सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ क्षेत्र का दौरा किया। इस दौरान नदी किनारे जाकर स्थिति का जायजा लिया गया। नदी की बदली धारा को परिवर्तित करने के लिए ड्रेजिंग (खुदाई से गंगा में जमी रेत को हटाना) का प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजने पर सहमति बनी है। फतेहपुर चौरासी के बद्रीपुरवा गांव के पास से गंगा की धारा उन्नाव की तरफ मुड़ गई है। वहीं कहीं–कहीं पर मुख्य धारा उपधारा में बदलकर दो भागों में बंट गई है। इसके चलते पिछले साल बाढ़ के दौरान कालीमिट्टी–शिवराजपुर मार्ग कट गया था। धारा बदलने से पानी आबादी की ओर आने की संभावना बढ़ गई है, जिससे गांवों के लोगों की खेतिहर भूमि व मकानों के गंगा में समाने की आशंका है। रविवार को विधायक श्रीकांत कटियार ने उपजिलाधिकारी बांगरमऊ बृजमोहन शुक्ला, अधिशासी अभियंता लोक निर्माण है।

प्रेम-प्रसंग में बाधा पत्नी की जहर खिलाकर की हत्या

उन्नाव, (संवाददाता)। कोतवाली क्षेत्र के बाबूखेड़ा मगरायर गांव में महिला से अवैध संबंधों का विरोध करने पर पति ने रविवार की रात पत्नी को जहर खिलाकर हत्या कर दी। इसके बाद घर से भाग गया। सूचना पर पहुंचे मायके वालों ने महिला का घर घेर लिया। पुलिस ने महिला को हिरासत में लेने के साथ ही गांव के बाहर खेत से हत्यारोपी को गिरफ्तार कर लिया। बिहार थाना क्षेत्र के जगतखेड़ा निवासी कंधई लाल ने बताया कि बीघापुर कोतवाली के गांव बाबूखेड़ा मगरायर गांव निवासी बेटी आरती (40) निरूसंतान थी। दामाद गंगादीन की पड़ोसी शादीशुदा महिला से नजदीकी थी। पता चला तो वह विरोध करने लगी। पति–पत्नी में इसी बात को लेकर आए–दिन विवाद होने लगा। रविवार की रात आरती ने पति को पड़ोसी महिला संतोष के घर की तरफ से आते देखा तो झगड़ा किया। रात में उसने पत्नी को जहर दे दिया और मौके से भाग निकला। सोमवार की सुबह घर का दरवाजा बंद होने और किसी के बाहर न निकलने पर पड़ोसियों ने अंदर जाकर देखा तो आरती मृत पड़ी थी। पड़ोसियों ने मायके वालों को सूचना दी। इस पर पिता कंधईलाल व व अन्य परिजन पहुंचे और दामाद की प्रेमिका का घर घेर लिया। सूचना पर सीओ मधुपनाथ मिश्रा, कोतवाल फोर्स के साथ पहुंचे और प्रेमिका को हिरासत में ले लिया। कुछ देर बाद गांव के बाहर से हत्यारोपी पति को भी गिरफ्तार कर लिया। पुलिस हत्यारोपी और उसकी कथित प्रेमिका को भी कोतवाली लाई। पिता ने पुलिस को बताया कि दामाद, उसकी तीन बहनें और प्रेमिका आरती को परेशान करती थीं। कई बार मारपीट भी की। रविवार की रात जहर देकर उसकी हत्या कर दी। कोतवाल राजपाल ने बताया कि पिता की तहरीर पर हत्यारोपी पति गंगादीन, उसकी तीनों बहनों के साथ प्रेमिका संतोषी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। शव का खेत में अंतिम संस्कार कर दिया गया है। हत्यारोपी पति और प्रेमिका को हिरासत में हैं। जांच की जा रही है। गंगादीन की कथित प्रेमिका संतोषी दो बच्चों की मां है। महिला का पति मुंबई में रहकर काम करता है। आरती की हत्या में पत्नी संतोषी का नाम आने से वह परेशान है। उसे बदनामी के साथ बच्चों की परवरिश की चिंता सताने लगी है। घटना की सूचना मिलने के बाद वह मुंबई से घर के लिए निकल पड़ा है।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व पर डीएम ने सिद्धनाथ मंदिर में किया पूजन

उन्नाव, (संवाददाता)। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व पर डीएम ने शहर के सिद्धनाथ मंदिर में पूजन किया। इस दौरान ओंकार जाप के साथ रुद्राभिषेक व महाआरती भी की। डीएम घनश्याम मीणा ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व पर पर्यटन एवं संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित कलश यात्रा को हरी झंडी दिखाई। यात्रा देवी मंदिर से प्रारंभ होकर सिद्धनाथ पहुंची और समाप्त हुई। इसके बाद डीएम ने सिद्धनाथ मंदिर पहुंचकर पूजन किया। आचार्यों ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधि–विधान से पूजन, ओंकार जाप, रुद्राभिषेक, महाआरती व दीपोत्सव कराया। डीएम ने मंदिर में पहुंचे श्रद्धालुओं को पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन हमारी परंपराओं एवं सामाजिक एकता को सुदृढ़ करते हैं। पूजन अर्चन के प्रसाद का वितरण हुआ।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक

श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

मो0 – 7007415808, 9415034002

Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबंधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।